❊ द्वितीय अध्याय ❊

'कितने पाकिस्तान' उपन्यास का तात्त्विक विवेचन

✳ द्वितीय अध्याय ✳

“कितने पाकिस्तान उपन्यास का तात्विक विवेचन”

प्रस्तावना

2.1 ‘कितने पाकिस्तान’ उपन्यास की कथावस्तु

2.2 उपन्यास के तत्व

2.2.1 कितने पाकिस्तान : कथावस्तु

2.2.2 कितने पाकिस्तान पात्र या चरित्र चित्रण

2.2.3 संवाद या कथोपकथन

2.2.4 कितने पाकिस्तान देशकाल वातावरण

2.2.5 कितने पाकिस्तान शैली

2.2.5.1 प्रतिकात्मक शैली

2.2.5.2 विश्लेषणात्मक शैली

2.2.5.3 पूर्व-दीप्ति शैली

2.2.5.4 पत्रात्मक शैली

2.2.5.5 डायरी शैली

2.2.5.6 आत्मकथात्मक शैली

2.2.6 कितने पाकिस्तान उद्देश्य

निष्कर्ष

✳ द्वितीय अध्याय ✳

"कितने पाकिस्तान उपन्यास का तात्विक विवेवचन।"

प्रस्तावना

कमलेश्वर एक कहानीकार के रूप में चर्चित और प्रतिष्ठित नाम है। अब-तक उनके प्रकाशित उपन्यास आकार लघु थे। उनका नया उपन्यास 'कितने पाकिस्तान' बृहद और बहुआयामी है। यह उपन्यास कमलेश्वर को उपन्यासकार के रूप में प्रतिष्ठित कराने में सहायक सिध्द होगा।

'कितने पाकिस्तान' यह उपन्यास कमलेश्वर के सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और साहित्यिक बातों का ज्ञान उजागर करनेवाला दस्तावेज हैं। इस उपन्यास में उन्होंने भारत-पाकिस्तान विभाजन की घटना को पाठकों के सामने रखा है। पाकिस्तान बनने की घटना को मिथक मानकर आज लोगों के दिलों-दिमाग में पलित 'अलगावाद' की भावना को रेखांकित करने का सफल प्रयास कमलेश्वर ने किया है।

'कितने पाकिस्तान' उपन्यास बृहद होने के कारण इसमें प्रासंगिक कथाओं की भरमार है। बहुत सी कथाओं का पूर्वाध हिंदुस्तान की एकता में है। मगर विभाजन के साथ कथाओं का उत्तरार्ध भी बदल गया हैं। ऐसी दो कड़ियों को पकड़ कर कमलेश्वर ने उपन्यास की कथावस्तु को अग्रेसर किया है। अदीब के जरिए कमलेश्वरने एक अदालत निर्माण की है। जिसका कोई निश्चित वक्त, स्थल नहीं है। मगर अदालत के सामने बड़े-बड़े सुरमा भी बयान देते हैं। अनेक सदियाँ अदीब के सामने अपने-अपने युग की दास्तान बताती हैं। देशी-तथा विदेशी संस्कृतियाँ अपनी सांस्कृतिक देन को उजागर करती हैं। उपन्यास की कथावस्तु सिर्फ हिंदुस्तान के परिपेक्ष्य में नहीं बल्कि विश्व के परिप्रेक्ष्य में लिखी है।

2.1 कथावस्तु :-

अदीब (कमलेश्वर) एक दैनिक पत्र का संपादक है। अदीब (लेखक) को अपने वे दिन याद आते हैं जब वह पढ़ाई के लिए मैनपुरी से इलाहाबाद आया था। इलाहाबाद स्टेशन पर उसकी विद्या नामक लड़की से मुलाखत हुई थी, जो सायंस की छात्रा थी। विद्या फत्तेहगढ़ में रहती थी। छुट्टियों में आते-जाते वक्त दोनों कानपुर तक साथ-साथ सफर करते थे। दोनों न चाहकर भी कानपुर आ ही जाते है। दो साल बाद कानपुर प्लेटफॉर्म पर विद्या उतरी। अदीब ने उसका सामान थमा दिया। तब विद्या ने इतना ही कहा- शायद आगे की पढ़ाई के लिए वह अगले वर्ष नहीं आ सकेगी। उनके बीच अलिखित और अव्यक्त भावनाओं का रिश्ता तो शायद बहुत गहरा था, पंरतु कहीं कुछ ऐसा नहीं था जो एक-दूसरे को उत्तर माँगने के लिए विवश करे। फत्तेहगढ़ जाने वाली गाडी पकडने के लिए विद्या पुल पर चढ़ने लगी और प्लेटफार्म की तरफ मुड़ने से पहले उसने अपना रूमाल गिराया था। किन्तु अदीब रूमाल उठा नहीं पाया क्योंकि उसकी गाड़ी आखरी सीटी देकर निकल रही थी। गाड़ी में आकर वह सोचने लगा शायद विद्या के घरवालों ने उसका रिश्ता तय कर दिया होगा और गर्मियों में उसकी शादी हो जायेगी। उन गर्मियों के बाद फिर विद्या उसे नहीं मिली। मगर जब भी वह कानपुर स्टेशन से गुजरता है तो वह रूमाल हमेशा उसे गिरता हुआ दिखाई देता है।

कई वर्षों बाद बम्बई में नौकरी करते हुए अदीब को एक रहस्यमय खत मिला जिसपर लिखनेवाले का कोई नाम पता तो नहीं था, पर संबोधन और मजनूम से जाहीर था कि इसमें ज्यादा मात्रा में उर्दू भाषा का प्रयोग किया है। अदीब को विद्या की याद आयी। लेकिन वह सायन्स की छात्रा थी। उसे उर्दू का एक हर्फ भी नहीं आता था। अत: खत की यह दास्तान रहस्यमय बन गयी।

तभी अदीब ने चौंककर देखा कि उसका साहायक महमूद टेलिप्रिंटर से उठायी हुए खबरों को लेकर बता रहा है कि - कारगिल के इलाके में घुसपैठियों के नामपर फिर पाकिस्तानी फौजियों ने अघोषित आक्रमण कर दिया। कारगिल क्षेत्र की नियंत्रण रेखा

तोड़कर पाकिस्तानी फौजियों ने कई मील अंदर तक बंकर और अड्डे बना लिए हैं। मगर पाकिस्तानी प्रधानमंत्री, विदेशमंत्री और फौजी अफसरों का कहना हैं कि घुसपैठिए इस्लामी मुजहिदि्दन हैं। मगर असलियत यह है कि वे पाकिस्तानी फौजी हैं। इन फौजियों ने 1972 के संधि पत्र का उल्लंघन किया है। इतने में दूसरा एडीटर कारगिल में शहीद सिपाहियों की लिस्ट ले आया।

अदीब इस घुसपैठियों की स्थिति के बारे में हमारे प्रधानमंत्री और रक्षामंत्री जी को पत्र लिखकर उनके विचार जानना चाहता है। खत भेजने के बाद वह सोचता रहता हैं कि इतने में धरती से प्रलयंकारी झंझावात उठने लगते हैं। अदीब इस झंझावात के बारे में जानना चाहता है। इसीलिए वह अर्दली महमूद को पुकारता है। अर्दली बताता है कि वह पिछली सदियों में चल गया था। जहाँ शंबुक की हत्या राम ने की थी। 'सतयुग' में धर्मशास्त्रों का अध्ययन, तप और मोक्ष को प्राप्त करने का अधिकार ब्राम्हण क्षत्रिय और वैश्य वर्णो को ही था। लेकिन शुद्रवंशी शंबुक ने दास धर्म को त्यागकर मोक्ष के लिए साधना की थी। इसीलिए राजा राम ने क्षत्रिय धर्म का पालन करते हुए ब्राह्मण धर्म की रक्षा के लिए शंबुक जैसे तपस्वी की गर्दन धड से अलग कर दी। इसी जघन्य अपराध के कारण ऐसे झंझावात चल रहे हैं। अर्दली आगे बताता है - कि रास्ते में आते वक्त 'वैदिक युग' अपना माथा पीट रहा था। वह युग आसक्ति और व्यभिचार की दास्तान है। ऋषि गौतम की पत्नी आहिल्या को इंद्र ने कंलकित किया था। अहिल्या निर्दोष होते हुए भी पत्थर की मुर्ति बन गयी। इसीलिए जब-जब धर्म की हानी होती है, अन्याय अत्याचार होता है तब-तब प्रलंयकारी झंझावात चलते है।

अदीब महमूद को पूछता है कि आज तो वह दौर नहीं हैं फिर यह झंझावात क्यों ? महमूद बताता है कि यह महाभारत के संग्राम का शोर हैं। कुरूक्षेत्र में कौरवों की ग्यारह अक्षौहिणी सेना और पांड़वो की सात अक्षौहिणी सेना एक-दूसरे के सामने खड़ी हैं। अठ्ठरह दिनों में बार-बार अन्याय-अत्याचार और धर्म की हानी हुई। इस महाभारत के युद्ध में मरे हुए लोगों की संख्या की बात सोचकर अदीब को चक्कर आने लगता है। इन अकारण मौत का प्रतिकार वह करना चाहता है। अदीब मृत्यु के

बदले 'जीवन' तलाशना चाहता है। जिसकी खोज में हित्ती सभ्यता का सम्राट गिलगमेश निकल चुका था।

युरक सम्राट गिलगमेश मृत्युपर विजय पाने की और अमरत्व प्राप्त करने की औषधि खोजकर लाने की प्रतिज्ञा करता है । इसी प्रतिज्ञा से बेबेलोनियाँ, मेसोपारामिया, सुमेरी-अक्कादी और सिंधु घाटी सभ्यता के देवता काँपने लगते हैं । मिलगमेश को समाप्त करने के लिए आकाश-पुत्र एंकिदूको मनुष्य रूप देकर पृथ्वीपर भेजते हैं। एंकिदू जंगली जानवारों के साथ रहता है, उन्हीं की तरह कच्चा मांस खाता है। एक शिकारी जंगल में उसे देखता है और आकर सम्राट गिलगमेश को बता देता है । गिलगमेश देवताआं के षड्यंत्र को जानता है। देवताओं की कमजोरी 'स्त्री' है, स्त्री के प्रति देवता तुरंत आसक्त हो जाते यह भी वह जानता है। इसीलिए शिकारी को देवदासी, रूना को लेकर जंगल में जाने की अज्ञा वह देता है। जंगल में तीन दिन बाद पशुओंकी झुंड़ में एंकिदू झील के किनारे आता है। देवदासी रूना ने उसे अपने प्रति आकर्षित करती है और उसे साधारण मनुष्य की तरह बनाती है। एंकिदू को लेकर देवदासी रूना युरक के लिए रवाना हो जाती है। सम्राट गिलगमेश और एंकिदू आमने-सामने आते ही एक-दूसरे पर झपट पड़ते हैं। गिलगमेश एकिंदू को उठाकर वायुमंडल में फेक देते। जब वह गिरने लगता है तो उसे अपनी बाँहो में सँभालकर देवताओं का षड्यंत्र पूछते हैं। एंकिदू बताता है कि देवता 'अनु' ने उसे पृथ्वी पर गिलगमेश को नष्ट करने के लिए भेजा है। गिलगमेश देवता 'अनु' पर क्रोधित होता है।

देवदासी रूना और एंकिदू ने जो भावना तलाश ली वही 'प्रेम' है। आगे सम्राट गिलगमेश ने एंकिदू के साथ मित्रता कर ली। गिलगमेश को नष्ट करने के लिए देवताओं ने एक साँड़ को पृथ्वीपर भेजा! तभी मित्रता नामक मूल्य की परीक्षा हुई। साँड़ को देखते ही एंकि दू उसपर झपट पड़ा । पर साँड़ ने उसे बुरी तरह घायल कर दिया। गिलगमेश ने साँड़ को मार डाला। पर वह एंकिंदू की स्थिति देख नहीं पाया। गिलगमेश प्रतिज्ञा करता है कि - मित्र एंकिंदू तूने मेरे लिए पीड़ा सही है। मेरी यातना तूने अपने उपर ली है। मित्रता के नाते मृत्यु का वरण किया है। कुछ भी हो मैं अपने मित्र और मनुष्य मात्र

के लिए मृत्यु को पराजित करके मृत्यु से मुक्ति की औषधि खोजकर लाऊँगा। मृत्यु से मुक्ति की औषध लेकर जिऊसुद्दु समुद्र में बैठा है यह रहस्य एक मत्स्य कन्या ने गिलगमेश को बताया। और गिलगमेश अथाह पानी के उस तलहीन संसार में नीचे उतरता गया। उसकी यात्रा अब भी सागर तल की गहराईयों में जारी है। प्रेम मित्रता, श्रम और शांति जैसे महातत्त्वों को मनुष्य ने आगे खोज डाला। एंकिदू और देवदासी रूना की कहानी 'दुनिया की प्रथम प्रेम कहानी है'। इसी प्रेम कहानी में बुटासिंह और जेनिब की कहानी भी शामील है।

पच्चास पचपन साल का बुटासिंह खेत से वापस आ रहा था। उसने देखा कि एक लड़की रक्षा के लिए उसकी ओर दौड़ती चली आ रही है। और एक हिंसक नौजवान उसका पिछा कर रहा है। पास आते ही लड़की बुटासिंह को बताती है कि यह नौजवान उसकी इज्जत लुटना चाहता है। बुटासिंह के पुछने पर नौजवान बताता है कि पाकिस्तान बन गया है। और इस लड़की को वह काफिलेवालों से छीन कर लाया है। बुटासिंह बताता है कि पाकिस्तान की लकीर खिंच गयी, खिंच जायपर हिंदू-मुसलमान के नामपर औरतों की इज्जत का बँटवारा नहीं हो सकता। कुछ पैसे देकर बुटासिंह ने नौजवान से लड़की को छुड़ा लिया। और उसे अपने घर ले आया। धीरे - धीरे यह खबर गाँव के मुखियाँ तक पहुँच गयी। घर में भाई-भौजाई बुटासिंह से नाराज हो गए। मुखियाँ के पुछने पर पता चला कि लड़की मुसलमान है और उसका नाम जेनिब है। गाँव के बड़े -बुढ़ों ने सलाह दी कि अब बुटासिंह जेनिब से शादी कर ले। और बुटासिंह और जेनिब की शादी हो गयी। आगे उन्हें एक बेटी हुई जिसका नाम तनवीर कौर रखा गया। जेनिब बुटासिंह के साथ जीवन यापन कर रही थी।

विभाजन के बाद दोनों में एक समझौता हुआ जिसके तहत पाकिस्तान में लुट ली गई हिन्दू औरतों और हिंदुस्तान में अगवा कर ली गई मुसलमान औरतों को तलाशा गया। बुटासिंह के भतिजे ने फौज के तलाशी दस्ते को खबर दी। उसी दस्ते ने जेनिब को दिल्ली के शरणार्थी कॅम्प में पहुँचा दिया। जिसके इंचार्ज मृदुला साराभाई थी। बुटसिंह जेनिब को तलाशता हुआ वहा पहुँच गया। बड़ी मिन्नते करने के बावजूद भी जेनिब

उसे नहीं मिली। जेनिब को पाकिस्तान में उसके घरवालों को सौंप दिया गया। जेनिब को पाने के लिए बुटासिंह ने कलमा पढ़ा और वह मुसलमान हो गया। उसने अपना नाम जमील अहमद मंजूर किया फिर भी उसे पाकिस्तान जाने की वीजा नहीं मिली। तो बुटासिंह छुपकर राजस्थान की सरहद से पाकिस्तान पहुँच गया। जेनिब के घरवालों ने बुटासिंह का मुसलमानत्व और उनका सहजीवन इसलिए बुटासिंह जेनिब को पाने के लिए अदालत में चला गया। मंजूर नहीं किया अदालत में जेनिब को बयान देने नहीं दिया। किंतु अदालत ने भी उनका सहजीवन स्वीकार नहीं किया इस दु:ख और विरह के कारण वह अपनी बेटी के साथ खुदकुशी कर लेता है।

हिंदूस्तान-पाकिस्तान लकीर खिंच जाने के कारण सरहद पर हो रहे नरसंहार पर लॉर्ड माऊंटबेटन की पत्नी एडविना आँसू बहा रही थी। लॉर्ड माऊंटबेटन उसे समझाते है कि इस विभाजन को लेकर गांधी, नेहरू, पटेल, गफ्फारखाँ, और जिन्ना भी उदास हैं। पर जिन्ना ने ही 2 जून वाली कॅबिनेट मिशन प्लॉन को नामंजूर करते हुए विभाजन की माँग की थी। जब उन्होने एकबार सार्वजनिक तौर पर हिंदुस्तान का विभाजन माँग लिया तो फिर उनका मन चाहे जितना पछताता रहे पर वे अपनी माँग पर ही अड़े रहे। आझादी क पहले ही हिंदूस्तान दो हिस्सों में बॅट गया।

अदीब की अदालत में रक्त-सनी दस्तके पड़ने लगी। सांप्रदायिक दंगों में मारे गए दस हजार लोग दस्तक दे रहे थे। तो बजरंग दल के नेता जो 'राम-जन्म भूमि मंदिर बनके रहेगा' की घोषणा दे रहे थे। एक त्रिशुल धारी ने दस्तक देते हुए कहा कि पाकिस्तान बनना तो बाबर के काल में शुरू हुआ था जब उसने राम-जन्म मंदिर तोड़कर बाबरी मस्जिद बनवाई थी।

सच्चाई जानने केलिए अदीब बाबर को अदालत में बुलाता है। बाबर अदालत में हाजिर होकर खुद पर लगाए गए आरोपों का खण्ड़न करना चाहता है। वह अदालत को बताता है कि हिंदुस्तान को मैं अपने लिए जितने आया था इस्लाम के लिए नहीं। तब तो मुसलमान मुसलमान के खिलाफ लड़ता था। इब्राहिम लोदी को पानीपत

मैदान में परास्त करके मैंने मुगल साम्राज्य की नीवं डाली थी। इब्राहिम लोदी को परास्त करने के लिए राणा सांगा और दौलत खाँ ने बाबर को बुलाया था। बाबर पर राम-जन्म भूमि मंदिर तोड़ने का आरोप लगाया है बाबर बताता है कि आगरा राजधानी से मथुरा पच्चास मिल दूर है। अगर मुझे हिंदूओंको सताना ही होता तो मैं कृष्ण का जन्मस्थान न तोड़ता। भागा-भागा अयोध्या तक जाके राम का जन्म-स्थान तोड़ने की क्या जरूरत थी ? और बाबर के कालखंड़ में श्रीकृष्ण को ही हिंदुओं का देवता और अवतार माना गया था। राम भगवान बने तुलसीदास के बाद। जब उसने 'रामायण' लिखी। तब तक बाबर का देहान्त हो चुका था। बाबर ने तुलसी का नाम जीते जी नहीं सुना।

लेकिन दुनिया तो कहती है कि अयोध्या के राममंदिर को 1528 में बाबर ने गिरवाया और अपने सूबेदार मीर बाकी को यह आदेश दिया कि उस जगह पर मस्जिद बनवा दी जाय। इस आरोप का खण्डन करने के लिए बाबर बाबरी मस्जिद पर लगा हुआ शिलालेख पढ़ने वाले ए. फ्यूहरर को अदालत में बुलाने के लिए कहते है जो कि आर्कियालॉजीकल सर्वे ऑफ इंडिया के जनरल डायरेक्टर रहे।

ए.फ्यूहरर बताते हैं कि उन्होने यह शिलालेख सन् 1889 में पढ़ा लेकिन आज वह शिलालेख पढ़ा नहीं जाता क्योंकि हिंदू -मुस्लिम के झगडों को जिंदा रखने वालों ने उसे पढ़ने लायक रखा ही नहीं। उस शिलालेख पर स्पष्ट लिखा था कि " यही कि हिजरी 930 यानी करीब 17 सिंतबर सन 1523 में इब्राहिम लोदी ने उस मस्जिद की नीवं रखावाई थी, जो 10 सिंतबर 1524 में बनकर तैयार हुई, जिसे अब बाबरी मस्जिद कहा जाता है। " फैजाबाद गजेटियर के लेखक एच.आर. नेविल 'बाबरनामा' के गायब पन्नों का सबूत लेकर यह दर्ज किया है कि बाबर अयोध्या में एक हफ्ते ठहरा और इसी ने प्राचीन राममंदिर को मिसमार किया। (अदीब) ने 'बाबरनामा' के साढ़े पाँच महिने यानी 3 अप्रैल, 1528 से 17 सिंतबर, 1528 तक कें पन्ने गायब क्यों है ? ऐसा सवाल बाबर से पुछा। बाबर ने अपनी सफाई में बेटी गुलबदन ने लिखा हुआ 'हुमायुँनामा' थे इन घटनाओं को लिया है। अदालत में गुलबदन बताती है कि हिंदुस्तान पहली बार वह और उसकी माँ मेहम बेगम आ रही थी। उन्हें लेने के लिए स्वंय अब्बा हुजूर (बाबर) अवध जंगल की

शिकार छोड़कर 7 अप्रैल पहले आगरा पहुँच चूके थे। आगे 10 अप्रैल से 10 जुलाई तक मेहम बेगम के साथ रहें। इसके बाद वे धौलपुर सीकरी आए। इन बातों से बाबर पर लगाए गए आरोप कुछ कम नहीं होते। इसीलिए बाबर मंहत छत्रदास को अदालत में बुलाना चाहते हैं। मंहत छत्रदास अदालत में हाजिर हो जाते हैं। जिन्हे अयोध्या के दंतथावन कुण्ड मंदिर के लिए माफीनामा मिला था। और मंहत छत्रदास बाबर के समकालीन थे। वे बताते हैं कि मस्जिद खाली जगह पर इब्राहिम लोदी ने बनवायी थी, उसमें कुछ फेर-बदल मीर बाकी ताशकंदी ने करवाई हो। जिसके वंशज सनेहुआ गाँव में मौजूद हैं। तहीकीकात के लिए अदीब और अर्दली सनेहुआ गाँव जाना चाहते हैं। इसीलिए तब तक अदालत स्थगित करते हैं।

आरोप, प्रत्यारोप, साजिशें आदि दस्त को से अदीब को जो कुछ खाली वक्त मिला, उसमें वह अपनी जिंदगी जीना चाहता है। कुछ अपनी यादों के साथ रहना चाहता है । उसे सलमा की याद आयी, जिसकी लाहौर एयरफोर्ट पर कराँची जाते वक्त मुलाखात हुई थी। सलमा के परिवार वाले नाना-नानी विभाजन के वक्त पाकिस्तान चले गए थे। तो माता-पिता मुसलमान होते हुए भी भारत आ गए थे। अदीब सलमा के इस अजिब परिवार के बारे में सोचता है। तब सलमा बताती है कि अब्बा की नजर में अर्थात इस्लाम की नजर में पाकिस्तान बनना गुन्हा है। क्योंकि इस्लाम नफरत नहीं सिखाता और पाकिस्तान निर्माण की बुनियाद ही नफरत हैं।

अदीब और सलमा एक दूसरे से आकर्षित हो जाते हैं। दोनो एक जैसे ही सपने देखते हैं। और यह आकर्षण धीरे-धीरे प्यार में बदल जाता है। वैसे सलमा शादी शुदा औरत होने के साथ-साथ एक बच्चे की माँ भी है। सलमा और अदीब दोनो मॉरिशस चले जाते हैं। लेकिन वहाँ भी सलमा के पति का दोस्त नईम उसे अदीब के साथ न रहने की सलाह देता है क्योंकि अदीब मुसलमान नहीं है। एक मुसलमान औरत किसी गैर मुसलमान के साथ नहीं रह सकती। मजहब अदीब और सलमा के लिए रूकावट जाता है। एक-दूसरे के साथ रहने के लिए किसी एक को धर्म-परिवर्तन करना पड़ेगा। इसीलिए दोनों मॉरिशस से पूरब की तरफ भाग निकले है। वे हिंदू महासागर को देख रेहे थे, जिसे चिरते

हुए फ्रांसीसी और अंग्रेजो के बेड़े मॉरिशस के नीचे से होते हुए हिंदुस्तान की ओर भाग रहे थे। ये सभी धनदौलत की तलाश में निकले थे।

दक्षिण अफ्रिका में वास्को डि गामा को एक हिंदुस्तानी मछुआरा मिला था, वह उस को साथ लेकर हिंदुस्तान की ओर बढ़ चला था। कोलंबस जो हिंदुस्तान की तलाश में निकला था। वह अमरिका के तट पर पहुँच गया। ये लोग नयी दुनिया तलाशनेवाले खगोलशास्त्री नहीं थे बल्कि वे लोग बड़े लुटेरे थे। अदीब को इतिहास पुरूष बताता है कि यह सत्रहवीं सदी का दौर था। तब भारत और चीन के क्षेत्र में पृथ्वी का तीन चौथाई औद्योगिक उत्पादन होता था। केवल कृषि में ही नहीं तो मसाले, वस्त्र, काष्ठ, चर्म आदि उत्पादनों की भी विशिष्ठता और गुणवत्ता विश्वविख्यात थी। अंग्रेज व्यापारी थॉमस रो जिसकी दवा से शंहशाह जहाँगीर की बेटी मौत के मुँह से बच गयी थी। वह जहाँगीर दरबार में हाजिर हुआ था। साथ में विलियम फिंच भी था।

थॉमस रो जहाँगीर को बताता है कि इंग्लैड के सौदागर भारत के साथ व्यापार का संबध बढ़ाना चाहते हैं। और कुछ व्यापारियोंने ई.स. 1600 में एक कंपनी कायम की है। और हम उसी ईस्ट इंडिया कंपनी के लिए सुरत बंदरगाह पर एक फैक्टरी कायम करना चाहते हैं। थॉमस रो ने नूरजहाँ से व्यापार और फैक्टरी के लिए इजाजत हासिल की। और यहीं से हिंदुस्तान को लुटने का किस्सा आरंभ हुआ।

अर्दली ने बीच में ही हाजिरी लगाते हुए काह कि धर्म के नामपर तो बाबर ने भी हिंदुस्तान को लुटा था लेकिन बाबर इस बात को स्वीकृत नहीं करता। वह बताता है कि तुम्हारे हिंदुस्तान में तब सिंधु नदी की रेती में सोने के जर्रे बहकर आते थे। इसी सोने की चिडियां -हिंदुस्तान पर मैं कब्जा करना चाहता था। और मेरा दुश्मन हिंदुस्तान का हिन्दू नहीं, तो आगरा का मुसलमान इब्राहिम लोदी था। उसपर हमला करने के लिए मुझे राणा सांगा और लोदी का चाचा दौलत खाँ ने संदेशा भेजा था।

बाबर के साथ यही आरोप मोहम्द बिन कासिम पर भी लगाया जाता है। वह बताता है कि अभी-अभी मुसलमान धर्म स्वीकार करके वह हिंदुस्तान को लुटने आया

था। हिंदुस्तान में क्षत्रिय लढ़ते थे और उनकी शिकस्त पुरे समाज की शिकस्त होती थी। यह ज्ञात हो जाने के कारण काश्मीर के महाराजा का सुबेदार जीबावन पर आक्रमण किया। क्योंकि उसने मुलतान की बस्ती के पूरब की तरफ बड़े तालाब में एक मन्दिर बनवा रखा था। जिसके नीचे ताँबे के चालिस कोठारों में सोने का चूरा छिपा कर रखा था। कोठार तोड़ने से पहले मुर्तियां तोड़कर तीन सौ मन सोना हासिल हुआ था और कोठारों से तेरा हजार दो सौ मन सोना हाथ आया था। सोने की लालच में ही मंदिरों को तोड़ा था। उसका बयान जारी था कि इतने में कश्मीर से जबरदस्त शोर उठा। जेहाद के नामपर पाकिस्तान के आंतकवादी मासूम नागरिंको को मारते और लुटते थे जैसे धर्म के नाम पर औरंगजेब ने भी हिन्दू जनता को सताया था। अदीब अदालत में औरंगजेब को बुलाता है। औरंगजेब के आने से पहले सलमा अदीब से इजाजत माँगकर चली जाती है।

औरंगजेब के आते ही अदालत सत्रहवी सदी का दौर बन गयी। अपने पिता शहाजहाँ को कैद करके और अपने भाई दारा, शुजा मुराद की हत्या करके खून से सनी हिंदुस्तान की राजगद्दी औरंगजेब ने हासिल की थी। सत्रहवी सदी के इस गृहयुध्द (उत्तराधिकार) के सभी गवाहों को अदालत में हाजिर होना पड़ता है। जिसमें दारा शिकोह, शुजा, मुराद, जसवंतसिंह, मिर्झाराजा जयसिंग, दिलेर खाँ, शहाजहाँ खलील उल्ला खाँ आदि के साथ-साथ गंगा, चम्बल, सतुलुज, व्यास, नर्मदा और सिंधु आदि नदियाँ भी हाजिर हो जाती हैं।

शंहशहा शाहजहाँ का दौर अन्तविरोधी खिंचाओ का दौर था। जहाँ कट्टर धर्मांधं भी थे और उदार न्यायवादी और जनवादी भी। 6 सितंबर, 1657 को शहाजहाँ गुर्दे की बीमारी से बीमार पड़ गया। शहाजहाँ दारा शिकोह को राजगद्दी सौंपना चाहता था। क्योंकि वही बड़ा बेटा था। पर मुगल साम्राज्य में उत्तराधिकार के लिए कोई नियम नहीं थे। जो कर्तव्य तत्पर होगा वही उत्तराधिकार बन सकता था। स्वयं शहाजहाँ ने अपने भाई को मौत के घाट उतारकर राजगद्दी हासिल की थी। इसीलिए वही घटना फिर से दौहराई ना जाय इसीलिए शहाजहाँ ने दारा के लिए एक सिंहासन बनवाकर अपने सिंहासन के पास रखा। औरंगजेब, मुराद और शुजा इस घटना से असंतुष्ठ थे ही

उन्होंने उत्तराधिकार के लिए युद्ध की तैयारी सुरू कर दी। अपने स्वार्थ के लिए औरंगजेब ने मुराद और शुजा से अंर्तगत संधि कर ली। औरंगजेब ने शुजा को 'विधर्मी शिया' और दारा को 'अनेकेश्वर वादी' बताकर मुराद को ही राजगद्दी के लिए योग्य बताकर उससे एक संधि कर ली। इसी तरह औरंगजेब ने व्यक्तिगत महत्वकांक्षाओं के लिए उत्तराधिकार के युध्द को 'धार्मिक' रूप दिया था। तीनों शहजादे उत्तराधिकार के लिए आगरा की तरफ निकल पड़े।

औरंगजेब की बढ़ती हुई सेना को रोकने के लिए स्वंय दारा शिकोह धौलपुर की तरफ 23 मई 1658 को निकल पड़ा। सामूगढ़ में दारा और औरंगजेब का युध्द हुआ। ख़लील उल्लाह की फौजों की गद्दारी वहज से दारा हार गया। किसी तरह जान बचाकर दारा आगरा पहुँचा। वहाँ से वह परिवारसह दिल्ली रवाना हुआ। दिल्ली से लाहौर या इलाहाबाद जाना ही उसने बेहत्तर समझा। दारा कंधार के रास्ते से ईरान की ओर जाने से पहले अफगानिस्तान में दादर रियासत में पहुँचा। वहीं उसकी बेगम नादिरा ने अंतीम साँस ली। 6 जून, 1659 को दादर रियासत के मलिक जीवन ने विश्वासघात करके दारा को बंदी बनाया। औरंगजेब ने दरबार में दारा को 'विधर्मी' साबित करके मौत की सजा दी। 30 अगस्त, 1659 को दारा का सिर कलम किया गया। आगे औरंगजेब ने अपने आपको कट्टर धर्मांध राजा के रूप में साबीत करने के लिए शिखों के धर्मगुरू तेगबहादुर जी को पकडकर उनको धर्म परिवर्तन के लिए तैयार करने की कोशिश की मगर जब उन्होंने यह पेशकश नामंजूर की तो उन्हें 11 नवम्बर, 1675 को मृत्युदंड दिया। औरंगजेब का कट्टर रूप तथा सत्रहवी सदी की विश्वासघातों की दास्तान सुनकर अदालत से गायब हो जाता है। अदीब अपनी नीजी जीवन की कहानियोंमे खो जाता है और उसे विद्या की फिर याद आती है।

तय हुआ था कि पाकिस्तान बनने और उसकी आजादी का दिन 14 अगस्त होगा। भारत की आझादी का दिन 15 अगस्त होगा क्योंकि 15 अगस्त 1945 में जापानियों ने बर्मा में ब्रिटिश साम्राज्य के आगे आत्मसर्मपण कर दिया था। महात्मा गांधी की सपनो को तोड़कर लॉर्ड माऊंटबेटन ने साजिश के तहत पाकिस्तान

बनाया। लाशो से पटी पडी जमीन एक -दूसरे देश की सरहद दिखा रही थी। इन लाशों में विद्या के माता-पिता और भाई भी थे।

विद्या की शादी तय हो चूकी थी। और सगाई के लिए विद्या अपने परिवार सह दिल्ली के रोह तक रोड से रामनगर ताँगे में जा रही थी। तभी कस्साबपुरे के पास दंगा भड़का। कसाईयोंने काफिरोंकी कत्तल करना शुरू किया। इसी में विद्या का ताँगा फँस गया। उसके आँखो के सामने माँ-बाप और भाई को मार दिया गया। विद्या बेहोश होकर ताँगे के नीचे आ गयी। जब बेहोशी का आलम टुटा तो उसने अपने आपको मुसलमान परिवार में पाया। मतलब कि बेहोशी के वक्त उसकी जान मुसलमान परिवार ने बचायी थी, जो अब पाकिस्तान जा रहा था। सैयद सिराज इस परिवार के प्रमुख थे। बेगम सिराज को विद्या गले पड़ी मुसीबत लग रही थी। सरहद पर सिपाहियों ने उन्हे लायलपूर की ओर जाने को कहाँ। विद्या को लेकर यह छोटासा परिवार लायलपुर पहुँचा। घर में विद्या (सिंदूर वाली लडकी) बेगम सिराज को खटकती थी। उसने मौलवी बुलाकर कलमा पढ़वाया और विद्या का माथा चुमकर उसका नाम परवीन सुलताना रख दिया। और थोड़े दिनों बाद पड़ोसी नदीम खाँ के साथ परवीन का निकाह कर दिया। उन दिनों अदीब की कहानी के अनुवाद विद्या को पढ़ने मिले। पहलीबार उसने एक कहानी पढ़ी तो उसे अदीब की याद आ गयी। उसने अदीब के नाम एक खत लिख डाला। जो बहुत दिनों के बाद अदीब को मिला। जिसमें लिखनेवाले का नाम तो नहीं था पर मजनूम उर्दू भाषा में था। परवीन को नदीम खाँ से तीन पुत्र हुए। कुछ दिनों बाद नदीम खाँ बीमार पड गए। तब उनके बड़े बेटे परवेज को उनकी जगह नौकरी मिल गयी। परवीन का ज्यादा वक्त अपनी पति की सेवा में ही जाता। इस विभाजन ने विद्या की किस्मत ही बदल डाली। उसे विद्या से परवीन सुलताना बनना पड़ा।

तभी अदालत में रक्त-सनी हिरोशिमा की दस्तके पड़ने लगी। विक्षप्त हिरोशिमा अदालत में अदीब से न्याय के लिए चिख रहा था। अदीब के पुछने पर पता चला कि 6 अगस्त, 1945 के दिन दूसरे विश्वयुध्द में पराजित जापान के हिरोशिमा शहर पर एटमी हमला हुआ था। पुरा शहर गायब हो गया था। ऐसा लगता था कि यहाँ पहले

शहर था ही नहीं। वही घटना 9 अगस्त को नागासाकी के साथ घटी। हिरोशिमा और नागासाकी अदीब की अदालत में खड़े उन मौत के सौदागरों को देख रहे थे जिनमें हिटलर, मुसोलिनी, तोजो आदि हुकुमशाह के साथ स्टिमसन गोब्ज ओपनहायमर आदि वैज्ञानिक भी थें। अणुबम का प्रयोग क्या किया गया जब कि जापान पुरी तरह टूट चुका था। हिटलर ने आत्महत्या की थी। मुसोलिनी भी परासत हो चुका था। वैज्ञानिकों को सिर्फ अणुबम की मारक शक्ति को देखना था इसीलिए फली -फुली हिरोशिमा शहरपर अणुबाम का प्रयोग किया गया।

इस अणुबम के धमाके से अदीब को दिल का दौरा पड़ गया। उसे अस्पताल में भर्ती करवा दिया। तीन दिन बाद उसे होश आया। लेकिन बाहर की हवा बेहद जहरीली थी। विज्ञान अपना नया रूप दिखा रहा था। 11 मई, 1998 की बुध्द पूर्णिमा के दिन दोपहर के 3 बजकर 45 मिनट पर रेगिंस्तान की धमनियाँ फट गयी थीं। पोखरन की कौंख में नौ सौ फीट नीचे एक के बाद एक ऐसे तीन अणुबम के धमाके हुए। विज्ञान यशस्वी हो चुका था। फिर पाकिस्तान में बलूचिस्तान के चगाई में विस्फोट हुए इसी कारण अदीब का दिल का दौरा धमाके के कारण बढ़ता गया। अस्पताल में उसे देखने के लिए भीड़ होने लगी। उसी अस्पताल में परवीन भी थी जो हिंदुस्तान देखने के लिए अपने बेटे परवेज के साथ आयी थी। वह अदीब को देखने आयी थी। अदीब ने उसे पहचाना। और रहस्यमय खत तथा उर्दू भाषा के मजनूम के पिछे की कहानी उसे समझ में आ गयी। अदीब विद्या को इतना ही पुछना चाहता था कि क्या पाकिस्तान में भी ऐसी ही जहरिली हवा बहती है। पर अदीब पुछ नहीं सका।

देखने वालों में कबीर भी थे। जो पाकिस्तान भारत, इंग्लड, अमेरिका आदि जगहों पर भिख माँगकर अपना गुजर बसर करते थे। कबीर के कंधे से भीगा हुआ झोला लटक रहा था। अदीब के पुछने पर कबीर ने उत्तर दिया कि इस बार वह ब्रांदा मस्जिद या माऊंट मेरी भिख माँगने नहीं जा रहा। बल्कि इस बार वह पोखरन और चगाई जा रहा है। वहाँ जाकर वह बोधिवृक्ष लगाने के बारे में कहता है। क्योंकि कबीर का मानता है कि बोधिवृक्ष की जड़े विष पी लेती है। उसी बोधिवृक्ष के भीगे पौंधे झोली में है। कबीर

अदीब से इजाजत लेकर चल पडा। पहले कबीर की सफेद छडी ने कदम उठाया और फिर पैर चल पड़े।

इस तरह कमलेश्वर ने 'कितने पाकिस्तान' उपन्यास की कथावस्तु का सृजन किया है। यह उपन्यास कमलेश्वर के लेखकिय प्रभाव का चरमोत्कर्ष है। इसे यदि 'बहुआयामी दस्तावेज' की संज्ञा दी जाए तो अतिशोक्ति नहीं होगी। उपन्यास में लेखक ने किस्सागोई शैली और जादुई भाषा में कथा ही नहीं इतिहास भी रच दिया है। इसमें बँधी-बँधाई कथा नही हैं बल्कि अनेक कथाओं मे भी एक ही कथा है। जिसमें विश्वशांति का संदेश समाहित है।

भारतीय तथा पाशात्य विद्वानों उपन्यास के निम्नलिखित तत्व माने है।

2.2.1 कथावस्तु

2.2.2 चरित्र चित्रण

2.2.3 कथोपकथन

2.2.4 देशकाल वातावरण

2.2.5 शैली

2.2.6 उद्देश्य

उपर्युक्त तत्वों के आधार पर 'कितने पाकिस्तान' उपन्यास का विवेचन

2.2.1 कितने पाकिस्तान : कथावस्तु :-

"किसी भी उपन्यास में कुछ घटनाओं का और कार्यो का चित्रण होता है। उन बातों का वर्णन होता हैं, जिन्हें व्यक्ति करते हैं या झेलते हैं। यही घटनाएँ और कार्य उपन्यास के कथानक कहलाते हैं।"[1] मौलिकता रोचकता, घटनाओं का निर्माण कौशल्य, सत्यता और स्वाभाविकता उपन्यास की कथावस्तु के गुण माने जातें हैं। उपन्यासकार किसी महत्वपूर्ण विषय और उद्देश्य को लेकर कथानक का निर्माण करता है।

बरसों बाद आये कमलेश्वर के 'कितने पाकिस्तान' उपन्यास को सही मायनों में बृहद उपन्यास कहा जा सकता है। इसीलिए की यह इतिहास और बीति हुई सदियों को एक नई दृष्टि से देखता है। और उसकी परिभाषा करने की कोशिश करता है। इस उपन्यास में आदमी -आदमी के बीच बंटवारे और भेदभाव को कमलेश्वर ने प्रस्तुत किया है। साथ ही अतीत के घटनाओं का समकालीन व्यक्तिओं के समक्ष प्रत्यक्ष घटित दिखाना और उनका संबंध प्रतीकात्मक रूप से जोड़ना कमलेश्वर का उद्‌देश्य रहा है।

उपन्यास की कथावस्तु का मूल स्त्रोत्र है 1947 में हुआ भारत-पाकिस्तान विभाजन। लेकिन अतीत में कितने ही पाकिस्तान बने और उन पाकिस्तानों के बीच से भी पाकिस्तान बनते रहें। अतः कथावस्तु से गुजरते हुए कमलेश्वर हमारे सम्मुख विचारणीय प्रश्न खड़ा कर देते हैं कि 'कब तक ऐसे पाकिस्तान बनते रहेंगे ?' जिसका उत्तर स्वयं लेखक को भी मालूम नहीं है।

'कितने पाकिस्तान' उपन्यास में 'पाकिस्तान' प्रतीक है अलगाववादी मानसिकता का। उपन्यास इस विकृत मानसिकता की जड़े तलाशने की कोशिश करता है। जिसके लिए अदीब भारत से लेकर चीन तुर्की, इरान, युगोस्लावियाँ, मॉरिशस, स्पेन अर्थात जहाँ -जहाँ सभ्यताओं का हरण क्षरण किया गया हो वहाँ तलाशता है। साथ ही अनेक सभ्यताओं सिंधु, युनानी, बेबेलोनिया, मेस्तोपोटामियन, सुमेरी अक्कादी आदि की व्याख्या (अलगाववादी मानसिकता) प्राप्त प्रचलित मिथकों के आधार पर करता है। जिसके लिए कमलेश्वर ने एक अदालत बनायी है जिसका कोई निश्चित काल या स्थान नहीं है। अदीब और उसका साहयक महमूद अतीत - वर्तमान, भूत- की यात्रा करता है। समय की नब्ज पर उंगली रखने और मृत तथा जीवित व्यक्तियों से साक्षात्कार करने का प्रयास वे दोनों करते है। बड़े से बड़े सुरमा, बादशहा इतिहास लेखक और विचारक उठकर अदीब की अदालत मेंअपनी सफाई पेश करते है।

उपन्यासकार की सफलता और कुशलता इसी में मानी जाती है कि वह उपन्यास में आनेवाली उपकथा को उपन्यास की आंतरिक एकता बनाएँ रखने में सक्षम हो।

कमलेश्वर ने कितने पाकिस्तान उपन्यास में उपकथाओं की भरमार की है । उपन्यास में बहुतसी उपकथाएँ आयी है और जिनका प्रारंभ भारत की अखंडता से शुरू होता है लेकिन उत्तरार्थ विभाजन के बाद बदल जाता है । जैसा कि बुटासिंह और जेनिब की प्रेमकहानी, विद्या की परविन बनने की कहानी आदि । इन कथाओं का प्रारंभ 'एकता' में तो अंत 'विभाजन' में हुआ है। कमलेश्वर ने लिखा है कि "विभाजन के साथ मनुष्य की आत्मा के विभाजित हो जाने की यह दारूण कहानी है।"[2]

उपन्यास की कथावस्तु पर सतयुग से लेकर आज के कलियुग तक प्रभाव दिखाई देता है। अयोध्यापति राम द्वारा शुद्रवंशी शंबुक की हत्या के कारण काली आंधियाँ चलने लगी, और धरती से प्रलयंकारी झंझावात उठने लगे। वैदिक युग में इंद्र ने अहिल्या को कलंकित किया। इसीलिए ऋषि गौतम ने अहिल्या को शाप दिया और वह पाषाण बन गयी। महाभारत के युध्द में धर्म की बार-बार हानी हो गयी। साथ ही उन्होंने 'मानवतावादी धर्म' की परिकल्पना की है।

कमलेश्वर ने 'मानव-प्रेम' और 'सत्ता प्रेम' के बीच का या धर्म और धर्मांधता के बीच के अंतर को स्पष्ट करने के लिए मुगल बादशाह शहाजहाँ के परवर्ती कालखंड का विस्तार से विवेचन किया है। शहाजहाँ के चारों बेटे दारा, मुराद औरंगजेब और शुजा उत्तराधिकार के लिए युध्द पर उतर आयें थे। शहाजहाँ दारा को उत्तराधिकारी बनाना चाहता था । लेकिन औरंगजेब तथा अन्य भाईयों को यह मंजूर नहीं था । औरंगजेब ने धर्म का सहारा लेकर सर्वधर्म प्रिय उदार और विद्वान दारा की हत्या की। यह कहा जा सकता है कि सत्ता लोलुप लोगों ने धर्म के नामपर सदैव मानवता का रक्तरंजित इतिहास लिखा है। हिंदू राजाओं ने 'सत्ता प्रेम' के कारण 'मानव प्रेम' को अनदेखा करके कट्टरपंथी परपीडक औरंगजेब का साथ दिया। "हर हिंदू राजा और महाराजा अपनी लड़की को एक महकते गुलदस्ते की तरह रियासत के बाजार में नीलाम कर रहा था और बदले में अपनी आराम और आराइश के लिए खिलवाते और जागीरों का सौदा कर रहा था।"[3]

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR

'कितने पाकिस्तान' उपन्यास में अंग्रेजों के भारत-आगमन के परिदृश्य को भी प्रस्तुत किया है। कमलेश्वर ने यहाँ व्यापार के बहाने धर्म (ईसाई) प्रसार और प्रचार आदि के साथ साम्राज्यवाद का भी विवेचन किया है। युरोप के सारे देश मुनाफे की तलाश में धर्म युध्दों को जन्म देते थे। अंग्रेजोंने एक ओर 'अयोध्या के राम-जन्मभूमीं मंदिर बाबर ने तोड़ा है' तो दूसरी ओर 'इस्लाम खतरे में है' आदि परस्पर विरोधी घोषणाओं का भ्रामक प्रचार करके हिंदू - मुस्लिम एकता को तोड़ दिया। सत्ता की हवस का शिकार हुए बॅ. जिन्ना ने 2 जून वाली मिटिंग में हिंदूस्तान अंखडता का प्रस्ताव ठुकराकर अलग पाकिस्तान की माँग की। अर्थात बॅ. जिन्ना ने भी 'धर्म का सहारा' लेकर पाकिस्तान बनाया। जैसे कि कमलेश्वर ने उपन्यास में लिखा है कि धर्मांध औरंगजेब द्वारा दारा की हत्या में पाकिस्तान निर्माण की नीवं दिखाई देती है। सत्ता की हवस ने भावी इतिहास को प्रदूषित कर दिया। देश में सांप्रदियक दंगें भड़क उठे थे। अत: कहा जा सकता है कि धार्मिक उन्माद मनुष्यता के लिए सदैव घातक रहा है। पाकिस्तान निर्माण में अंग्रेजों की साजिश जिन्ना की बीमारी पं.नेहरू, इकबाल, गांधीजी आदि नेताओं के विचारोंपर प्रकाश डाला है। लोगों के दिलों -दिमाग में पलित 'अलगाववादी' भावना के कारण 1947 में पाकिस्तान अस्तित्व में आ गया। किन्तु इराक-ईरान के बीच रही जंग, बंगाली अपना अलग बंगलादेश बना रहा है, पंजाब के सराय की अपना सुबा माँग रहे हैं। पख्तून अपना पख्तूनिस्तान चाहते हैं। अल्लाइल्ला मेंगल बलुचिस्तान माँग रहा है। लंका में तमिल अपनी अलग लंका चाहते हैं। कराची में सिंध और एक पाकिस्तान बनाना चाहते हैं। इन घटनाओं में यह पता चलता है कि दुनिया में आज कितने (हजारों) पाकिस्तान बन रहें है। कमलेश्वर इस बनते हुए पाकिस्तान को बंद कर देना चाहते हैं तथा बॅटवारे को खत्म करना चाहते है। वे कहते है जितना टूटना था टूट चूका, जो टूटकर बचा है उसे टूटन से बचाओ।

इसी के साथ-साथ कमलेश्वर ने दूसरे विश्वयुध्द और 'अणुयुग' का अवतरण की घटनाओं को पाठकों के सामने प्रस्तुत किया है। अणुबम के निर्माताओं ने 16 जून, 1945 को मैस्किकों के आलामागोर्दो के रेगिस्तान में पहला सफल अणु परिक्षण किया था। और दूसरे विश्वयुद्ध में अणुबमों की मारक क्षमता जानने के लिए जपान के

हिरोशिमा और नागासाकी शहर को अपना लक्ष्य अमरीका ने बनाया था। अलामागोर्दो के रेगिस्तान मे सफल अणु परीक्षण के बाद वैज्ञानिक ओपनहायमर ने कहा "मैं ही मृत्यु हूँ। और मैं ही जीवन . . . अब मैं मृत्यु - रूप में अवतरित हुआ हूँ . . पृथ्वी के विध्वंस के लिए . . मैं ही मृत्यु हूँ. . .।" विज्ञान के इस शोध का सत्ता पिपासु लागों ने मानव विनाश के लिए इस्तेमाल किया।

आज विश्व के सारे देशों में शस्त्रास्त्र प्रतियोगिता शुरू हो गयी है। इसमें भारत भी पिछे नहीं रहा। उन्होंने पोखरन में तीन सफल अणु परीक्षण लिए। पाकिस्तान ने भी बलुचिस्तान के चगाई में तीन अणुपरीक्षण लिए। आज विश्व तीसरे विश्वयुद्ध के दरवाजे पर खड़ा है। कभी भी युद्ध हो सकता है। फिर भी हिंसा और रक्तपात की अनेकानेक ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक घटनाओं के बीच 'कितने पाकिस्तान' में कमलेश्वर ने कुछ सद्भावनाओं से भरी घटनाएँ तथा प्रेम प्रसंग चित्रित किए हैं जिसके कारण पाठक भविष्य के प्रति पूर्णत: निराशावादी होने से बच जाता है। अंत तक पहुँचते - पहुँचते मानवता के भविष्य के प्रति आशा की किरण खोज ही लेता है। अणु परिक्षणों के कारण जहरिली हवा को शुद्ध करने के बारे में कमलेश्वर ने भारत पाकिस्तान द्वारा लिए गए।"

इसी तरह कमलेश्वर द्वारा लिखित 'कितने पाकिस्तान' यह उपन्यास कथावस्तु के गुणों का प्रतिरूप है। उपन्यास में बाबर पर लगाए गए आरोप, उनका खण्डन सत्रहवी सदी का उत्तराधिकार युद्ध तथा पाकिस्तान -भारत विभाजन आदि कुछ मौलिक एंव रोचक घटनाएँ हैं जो सत्य भी है और मानव जीवन और मानव स्वभाव का चित्र प्रस्तुत करती है। अदीब की अदालत में हजारों बरस बुढ़े इतिहास को पेश कर अपने-अपने वक्त की संकटापन्न स्थितियों को चित्रित किया है। उपन्यास में इतिहास, संस्कृति, राजनीति के जरिए मनुष्य के मन में पलित अलगाव, अन्तर विरोध, विकृतियों अन्तद्वन्द्वों स्वप्नों, महत्वकांक्षाओं पर कमलेश्वर ने प्रकाश डाला है।

2.2.2 पात्र तथा चरित्र चित्रण के आधार पर 'कितने पाकिस्तान उपन्यास का विवेवचन

उपन्यास मानव जीवन का चित्र होता है। अत: यह आवश्यक है कि पात्र भी सजीव स्वाभाविक एवं सहज हो। वे न तो अलौकिक हो और न असामान्य हो। उपन्यासकार की महानता इसी बात पर निर्भर करती है कि उसके पात्र कितने समय तक हमारे स्मृति पटल पर अंकित रहते हैं। और हमारी भावनाओं को किस मात्रा में प्रभावित करते हैं। जैसे कि प्रेमचंद जी का होरी। पात्र तथा चरित चित्रण के लिए उपन्यासकार को समाज और जीवन का प्रत्यक्ष और व्यापक अनुभव आवश्यक है। ऐसा होने से पाठक उपन्यास पढ़ने के बाद भी अपने भीतर पात्र का प्रभाव महसूस करते हैं। अत: उपन्यासकार की महत्ता की एक कसौटी यह भी है कि वह अपनी कृतियों में चरित्र की कितनी विविधता दे सकता है। उसके चरित्र चित्रण की सीमाएँ क्या हैं, उसके पात्रों में कितना विस्तार और कितनी गहराई है। परंतु इस संबेध में यह भी ध्यान में रखना आवश्यक है कि जब तक लेखक पात्र के वर्ग, उसके आचार-विचार, व्यवहार, बोलचाल वेशभूषा आदि से परिचित न हो,तब तक उसके चित्रण का प्रयत्न न करे।

उपन्यास का सुत्रधार है - अदीब (लेखक)। एक ऐसा अदीब जो किसी भी दौर के अत्याचारों अनाचारों के खिलाफ लड़ने को तैयार हैं। अन्याय, अत्याचारों की दास्तान सुनने के लिए तथा उन पर विचार विनिमय करने के लिए अदीब ने एक अदालत बनायी है। जिसका कोई निश्चित समय नहीं है और न ही कोई निश्चित स्थान। इस अदालत में समय से पूर्व मरे हुए लोगों की दस्तके सुनी जाती हैं। उनके इस अप्राकृतिक मौत को जिम्मेदार रहनेवालों को अदालत में बुलाया जाता हैं, और उनसे बयान लिया जाता है। यदी वे बयान ना भी दे तो उनकी खामोशी की भाषा इस अदालत को समझती है। फिर इसमें इंसान हो या प्राकृतिक स्थितियाँ, हो।

अदीब और उसका सहायक अर्दली महमूद दोनों युगों की नब्ज पर उंगली रखकर झूठ का पर्दापाश करते हैं। उपन्यास में राजा राम पर भी प्रकाश डाला है।

'सत्‌युग में' राम द्‌वारा शंबुक की हत्या होना तथा 'वैदिक युग' में इंद्र द्‌वारा अहिल्या को कंलकित करना आदि घटनाएँ उस युग में हो गयी अन्याय अत्याचारों को रेखांकित करती हैं। इसके साथ कमलेश्वर ने 'महाभारत' के युद्‌ध का भी चित्रण किया है जिसे धर्म-युद्‌ध कहा गया। किंतु इस धर्मयुद्‌ध में हर दिन धर्म को पैरोतले कुचला गया। अठारह अक्षौहिणी सेना में से सिर्फ पाँच पांडव और कृष्ण बचे थे। मतलब अनगिनत लोगों के अप्राकृतिक मौत हो गयी थी।

कमलेश्वर ने हिंदुस्तान की स्वतंत्रता पूर्व स्थिति का भी चित्रण किया है। इसमें बाबर का कालखंड अंग्रेजों का भारत आगमन तथा जहाँगीर नुरजहाँ का कालखंड साथ में सन 1857 का राष्ट्रीय संग्राम सत्रहवी सदी का उत्तराधिकार युद्‌ध आदि घटनाओं को प्रस्तुत किया है। बाबर पर लगाया गया आरोप (कि बाबर ने अयोध्या का रामजन्मभूमी मंदिर तोड़ा) की सच्चाई जानने तथा झूठ का पर्दापाश करने का काम अदीब करता है। धर्म का सहारा लेकर ब्रिटिशियोने (इतिहासकार) अपने सहित्यमें रामजन्मभूमी और बाबरी मस्जिद के झगड़े को जिंदा रखने का प्रयास किया है। मगर बाबर के समकालीन महंत छत्रदास द्वारा दिया गया बयान में कहा है कि मसजिद इब्राहिम लोदी ने खाली जगह पर बनवायी थी। अर्थात्‌ अदीब द्‌वारा मंदिर मसजिद के झगडे पर पर्दा गिर जाता है।

आगे कमलेश्वर ने 'जहाँगीर के दौर' का चित्रण किया है। जहाँगीर के कालखंड में ही ब्रिटिश भारत आ गये। पहले तो वे व्यापार करते थे। धीरे-धीरे यहाँ राजसत्ता में हस्तक्षेप करने लगे। और फिर उन्होंने अपनी सैन्य शक्ति के बलबुते पर प्लासी के रणसंग्राम में सन्‌ 1757 को सिराजुद्‌दौला को हराकर ब्रिटिश सत्ता की नींव डाली। इस घटना का चित्रण कमलेश्वर ने नाटकीय ढंग से किया है। जिसका उल्घोषक अर्दली महमूद है जो मंच का पर्दा उठता है और बयान भी देता है।

'सत्रहवी सदी' के उत्तराधिकार युद्‌ध का वर्णन करते हुए कमलेश्वर ने अदीब की सहायता से अदालत में उन सभी नायक, प्रतिनायक, खलनायक तथा उत्तराधिकार युद्‌ध के सभी गवाहओं को बुलाते हैं। जिनमें दाराशिकोह, शुजा, औरंगजेब,

मुराद, जसवंत सिंह, मिर्झा राजा जयसिंह्न, सुलेमान शिकोह, सिपिहर शिकोह, दिलेर खाँ, दाऊद खाँ, खलील उल्ला खाँ, मनुची शहाजहाँ और सैंकडो लोगों के अलावा गंगा, नर्मदा चंम्बल, सतलज, व्यास और सिंधु नदियाँ भी मौजुद थी। इन सभी गवाहों ने अपने-अपने बयान दिये। अत: औरंगजेब द्वारा दाराशिकोह की हत्या करना, औरंगजेब का धर्मांध रूप पाटकों के सामने उद्घाटीत होता है। कमलेश्वर को धर्मांध और कट्टर औरंगजेब द्वारा दारा की हत्या में पाकिस्तान नीवं दिखाई देती है।

अदीब ने अदालत में लॉर्ड माऊंटबेटने बुलाया। जिसने पाँच महिने में पाँच हजार साल पुरानी चली आयी अखंडता एकता की परंपरा को तोड़कर पहली बार इस हिंदुस्तान के इतिहास को विभाजन का शिकार बनाया था। ब्रिटिश सत्ता ने 'फोडो और राज्य करो' इस मंत्र के सहारे लिया। बॅ. जिन्ना को 'पाकिस्तान का लालच देकर अपनी ओर कर लिया।' 'हिंदुस्तान में इस्लाम सुरक्षित नहीं हैं' आदि घोषणाओं का प्रचार करके अलग इस्लाम देश अर्थात पाकिस्तान की माँग बॅ. जिन्ना इकबाल आदि ने की। फलस्वरूप सन 1947 में अखंड हिंदोस्तान का विभाजन हुआ और पाकिस्तान दुनिया के नक्शे में आ गया।

अदीब के सहारे कमलेश्वर ने दूसरे विश्वयुद्ध में क्षत-विक्षत हिरोशिमा और नागासाकी का भी चित्रण किया है। तथा उनकी इस प्रकार की दशा बनाने वाले अमरिका के प्रेसीडेंट रूजवेल्ट, ट्रूमॅन और सलाहकार स्टिमसन भौतिक शास्त्री रार्बट औपनहायमर आदि को भी अदालत में बयान देने के लिए आना पड़ता है। साथ में हिटलर मुसोलिनी तोजो आदि को भी अदालत में हाजिर किया जाता है। ये सब संगीन मानव हत्या के अपराधी है।

निष्कर्षत: यह कहा जा सकता है कि 'कितने पाकिस्तान' उपन्यास कमलेश्वर जी का बृहद और बहुआयामी उपन्यास है। इसका कथा क्षेत्र भारत से लेकर विदेशों तथा उनकी संस्कृति सभ्यताओं में हैं। इसीलिए उपन्यास में प्रासंगिक कथाओं की भरमार हो गयी हैं। और पात्रों की तो बरसात ही हो गयी है। कमलेश्वर ने अनेक पात्रों को

14378 A

लेकर कथा को प्रवाहित किया है। लेकिन इस बात का ध्यान रखा है कि कोई भी पात्र कथा के मूल उद्देश्य में सक्ति न हो। हर पात्र तथा चरित्र चित्रण के लिए कमलेश्वर के पास समाज और जीवन का प्रत्यक्ष और विशद अनुभव था। साथ ही साथ उन्होंने प्रकृति का भी चित्रण किया है। जैसे सत्रहवी सदी के उत्तराधिकार युद्ध का आँखों देखा वर्णन गंगा, नर्मदा, सतलज, चंम्बल व्यास और सिंधु नदियों द्वारा किया। कमलेश्वर ने अपनी प्रतिभाशक्ति के बलबुते पर अदीब की अदालत का निर्माण की और अदालत में इन नदियों द्वारा ऐतिहासिक पात्रों पर प्रकाश डालने का प्रयास किया है। तथा सत्य को उद्घाटीत किया है। लॉर्ड माऊंट बेटन द्वारा, पाकिस्तान विभाजन ब्रिटिशोंकी फूटनीति बॅ.जिन्ना की बीमारी, इकबाल का स्वार्थी रूप आदि घटनाओंपर प्रकाश डाला है।

अर्थात इन सभी घटनाओं को एक सुत्र में बांधने का प्रयास अदीब करता है। उपन्यास में पौराणिक पात्रों में राम, कृष्ण ती गौतम और अहिल्या आदि आते हैं। तो देवपात्रों में इंद्र, चंद्रमा, चित्रगुप्त यमराज सुमेरी सभ्यता के देवता यवनिक के बेबालोनियस बेबोलानिया सभ्यता का देवता, अणु, देवदासी रूना आदि का चित्रण किया हैं। ऐतिहासिक पात्रों में दारा, औरंगजेब, शहाजहाँ बाबर, गुलबदन,मुराद, मिर्झाराजा जयसिंह जसवंत सिंह, सुलेमान शिकोह जहाँआरा रोशनआरा, नुरजहाँ, जहाँगीर आदि का चित्रण किया है। राजनीतिसे संबधित पात्रों में म. गांधी इकबाल, बॅ.जिन्ना लॉर्ड माऊंट बेटन आदि पर प्रकाश डाला है। साथ में हमारे आज के राजनीतिज्ञों का भी किया है।

उपर्युक्त पात्रों को देखते हुए पाठक संभ्रम में पड जाता है कि उपन्यास का नायक और खलनायक कौन है ? और अदीब को हम इस उपन्यासका नायक क्यों नही मान सकते।

तो कहना यह होगा कि अदीब पाठकों को उस कथा या घटना तक पहुँचाता है, तथा अपनी वर्णनात्मक शैली के जरिए उस युग का अवतरण वह पाठकों के सामने करता है। मगर उस युग के नायक तो वही होगे जिन्होंने उस युग को जिया है और भोगा है। अदीब सिर्फ उनका सुत्र संचालन करता है। अत: कहना यह होगा कि अदीब

उपन्यास का सुत्रधार है । नायक नहीं हैं। साथ ही उपन्यास में घटीत घटनाओं के कालखंड को देखते हुए कमलेश्वर ने ही कहा है कि "कोई नायक या महानायक सामनें नहीं था, इसीलिए मुझे समय को ही नायक महानायक और खलनायक बनाना पड़ा। "[4]

2.2.3 कितने पाकिस्तान : संवाद तथा कथोपकथन

उपन्यास में कथोपकथन रोचक, स्वाभाविक, सहज, पात्र तथा परिस्थिति के अनुकूल हों तो उनसे सजीवता और यर्थाथता आ जाती है। अत: आज का उपन्यासकार अपनी रचना में इसका अधिकाधिक प्रयोग करता है। पर कथोपकथन का प्रयोग विवेकपूर्ण और सोद्‌देश्य होना चाहिए। कथोपकथन कथानक को आगे बढ़ाने तथा बीती घटनाओं की सूचना देने या पात्रों की चारित्रिक विशेषताओं को उद्‌घाटित करने में सहायक सिद्‌ध होता है।

यदि उपन्यासकार कुशल कथोपकथन -योजना की क्षमता का धनी है तो वह विश्लेषण मत प्रतिपादन तथा अपनी और से कार्य-कारण मीमांसा का कार्य कथोपकथन से ही ले सकता है जिसके फलस्वरूप उसकी रचना अनावश्यक विस्तार से बच जाती है। लेखक को यह भी ध्यान में रखना चाहिए कि काट-छांट, साज-संवाद तथा कलात्मक बनाने के प्रयास में संवाद कृत्रिम, पुस्तकीय तथा अविश्वसनीय न बने। अत: उसे बीच का मार्ग ही अपनाना चाहिए और अपने कथोपकथन को अधिक सरल, स्वाभाविक, सजीव और प्रभावशाली बनाना चाहिए।

'कितने पाकिस्तान' उपन्यास के संवाद छोटे तथा नाटकीय भी दिखाई देते है जैसे -

" - कहाँ थे तुम ?

- हुजूर . . . . मैं पिछली सदियों में चला गया था।
- पिछली सदियों में . . . क्यों ?
- मैं अपने पूर्वजोसे मिलने गया था।

- पूर्वजोंसे ! अदीब ने आश्चर्य से पूछा।

जहाँगीर और थॉमस के बीच का संवाद इस प्रकार है :

" - नाचीज एक सौदागर है हुजूर . . . तिजारत की गरज से आया हूँ . . . इंग्लैड के बाशिन्दे आप की रियाया के साथ कारोबार करना चाहते हैं आलमपना।

- जरूर करें। हिंदुस्तान के ताजिर और महाजन हर किस्म की तिजारत के काबिल हैं।"

- उक्त संवाद पाठकों को 17 वी सदी में पहुँचा देता है।

अदीब की अदालत में अदीब और माऊंटबेटन के बीच संवाद इस प्रकार है :

- "तो खैर . . . बातचीत शुरू करें। आप वायसराय बन कर कब इंडिया पहुँचे ?

- मार्च 1947 में।

- आपका ब्रीफ क्या था ?

- यही कि इंडिया को आझादी देनी है।

- आझादी देने के लिए चलने से पहले आप किस-किस से मिले थे ?

- जाहिर है कि मैं प्रधानमंत्री एटली से मिला था।

- और ?

उक्त संवाद में पात्रों का नामोल्लेख न होते हुए भी संवाद में प्रवाहमयता आयी है।

- मैं अपने कजिन और भारत के बादशाह जार्ज सिक्स्थ से मिला था।

इसी तरह कमलेश्वर ने उपन्यास में रोचक संवादो के साथ-साथ जिज्ञासा पैदा करने वाले, पात्रानुकूल और परिस्थिति के अनुकूल संवादो को छोटे-बड़े किये हैं। उपन्यास 'कितने पाकिस्तान' के संवाद सहज होने के कारण उनमें सजीवता आयी है। संवादो के सहारे ही कमलेश्वर ने सच्चाई पर प्रकाश डालकर झूठ का पर्दापाश किया है।

कितने पाकिस्तान : देशकाल वातावरण

2.2.4 देशकाल वातावरण के आधार पर कितने पाकिस्तान का विवेचन :

पात्रों के चित्रण को पूर्णता और स्वाभाविकता देने के लिए देशकाल वातावरण का ध्यानरखना आवश्क है। घटना का स्थान, समय, तत्कालीन परिस्थितियोंका ज्ञान उपन्यासकार के लिए जरूरी है। अर्थात देशकाल वातावरण का अर्थ यह है कि साहित्यिक कथानक और पात्रों का चित्रण विशिष्ठ प्रदेश विशिष्ठ वातावरण और विशिष्ठ काल को ध्यान में रखकर करें। तभी पाठक उसमें रूचि लेकर विश्वासपूर्वक कृति को पढ़ सकता है।

डॉ. शांतिस्वरूप गुप्त के शब्दों में "देशकाल वातावरण के अंतर्गत हम दो बाते लेते हैं - प्रकृतिक पृष्ठभूमि या चतुर्दिक परिस्थिति और काल - विशेष से सबंध आचार-व्यवहार रीति-रिवाज और जीवन-पद्धति। प्रथम को हम भौतिक और द्वितीय को सामाजिक वातावरण कह सकते है।"[11] यथार्थ की और जैसे-जैसे हमारी प्रवृत्ति बढ़ती जाती है हम इस ओर अधिक जागरूक ओर सचेत होते जा रहे हैं। और लेखक का भी यह प्रयत्न रहता है कि वह अपने युग का पूर्ण सजीव चित्र पाठक के मन:पटल पर अंकित कर दे। यथार्थ के प्रति अनुक्ति के कारण अब उपन्यास में आंचलित या क्षेत्रीय तत्वों का अधिकाधिक प्रयोग होने लगा है। अंचल, वर्ग, क्षेत्र, समुदाय इनके यथार्थवादी चित्रण पर ही उपन्यासों की सफलता निर्भर करती है।

"कितने पाकिस्तान" के अंतर्गत कमलेश्वर ने सामाजिक वातावरण का (काल-विशेष) बड़ा ही रोमांचकारी वर्णन किया है। उपन्यासकार ने सतयुग वैदिक युग और कलियुग का वर्णन किया है। सतयुग के अंतर्गत राम राज्य का चित्रण किया है। यहाँ

कमलेश्वर ने तत्कालीन परिस्थितियों पर प्रकाश डाला है। धर्मशास्त्रों के अध्ययन, तप और मोक्ष प्राप्त करने का अधिकार केवल ब्राह्मण, क्षत्रिय वैश्य को ही था। शंबुक जैसे क्षुद्रवंशी तपस्वी ने मोक्ष के लिए साधना की। तब राम ने क्षत्रिय धर्म का पालन करते हुए ब्राह्म धर्म की रक्षा के लिए शंबुक की गर्दन धड से अलग कर दी। वैदिक युग आसक्ति व्यभिचार की दास्तान है।

कमलेश्वर ने राजस्थान के रेगिस्तान में बुटासिंह जेनिब की प्रेम कहानी चित्रीत की है। विभाजन के बाद का वातावरण स्पष्ट हुआ है - "पाकिस्तान की लकीर खिंची तो ठाणी में रहना मुश्लिक हो गया। गाँव -ठाणी के सब मुसलमानी - मुसलमान काखाँ बनाकर उस लकीर के पास पहुँचने के लिए चल पड़े।"[12] पिछे छूटी जेनिब उस हिंसक नौजवान के हाथ लग गयी। ऐसी कितनी औरतें विभाजन के नाम पर वासना का शिकार बनी होगी।

विभाजन के कारण सांप्रदायिक दंगों का भुचाल आया। आम जनता कट्टर धर्मांधं लोगों की हाथ का शिकार बन गयी। विद्या से परवीन बनने की घटना इस दंगो का एक उदाहरण है। लाशों से पटी पड़ी जमीन बता रही थी कि एक देश की सरहद कहाँ खत्म होती है और दूसरे देश की सरहद कहाँ शुरू होती है।

'कितने पाकिस्तान' उपन्यासमें कमलेश्वर ने ऐतिहासिक घटनाओं का भी चित्रण किया है। सत्रहवी सदी का वर्णन खास मात्रा में किया है। शंहशाह जहाँगीर का दरबार लग चुका है। "जहाँगीर नूरजहाँ और महल के सैनिक और खबास मौजूद थे। किले से कुछ ही दूरी पर तूरान के खालीफा के वो सात नुजाइन्दे भी मौजूद थे। जो कई दिनों से शंहशाह के हुजूर में हाजिर किए जाने की प्रतीक्षा में थे। दूसरी तरफ चुनिदां व्यापारियोंका दल दूसरे मुल्कों से हुई तिजारत का हिसाब - किताब देने के लिए हाजिर था। तीसरी तरफ सल्तनत के आला-अफसर मौजूद थे जो तिजारती रास्तों की देखभाल किया करते थे।"[13] इस तरह कमलेश्वर जहाँगीर के दरबार का वातावरण चित्रित किया है। इसी प्रकार

'उत्तराधिकार का युद्ध' में भी देशकाल वातावरण की सहायता से कमलेश्वर ने सजीवता और स्वाभाविकता लाने का प्रयास किया है।

उत्तराधिकार का निर्णायक युद्ध सामूगढ़ में हुआ। "सामूगढ़ के उस रेतीले मैदान में दारा ने अपनी फौजें तैनात कर दी थीं। उसका तोपखाना बर्कन्दाज खाँ और मनुची के हवाले था। इस तोपखाने के पीछे पैदल फौजियों के शानदार दस्ते थे उनके पास तोडेदार बंदूके थीं। इनके पीछे पाँच सौ उँट थे, जिनके पीठों पर चक्करदार तोपें मौजूद थीं। . . . बीचों-बीच दस हजार सैनिकों का दस्ता था -इसमें खुद हाथीपर सवार शहजादा दारा था।"[14] इस प्रकार कमलेश्वर ने युद्ध की पूर्व स्थिति का हु-ब-हू चित्रण किया है। इससे पाठक के मानस पटला में युद्ध की स्थिति का चित्र तैयार हो जाता है। वह उपन्यास में और रूचि लेता है। ऐसे ही बहुत से प्रसंगों का चित्रण कमलेश्वर किया है। काल विशेष के साथ-साथ कमलेश्वर उपन्यास में प्राकृतिक पृष्ठभूमि का भी चित्रण किया है। प्राकृतिक पृष्ठभूमि का चित्रण तो उपन्यास की रोचकता सजिवता और स्वाभाविकता में चार चाँद लगाता है। हम कलाकार (उपन्यासकार) से अपेक्षा करते हैं कि वह चतुराई विशदता और कलात्मक के साथ प्राकृतिक दृश्यों का चित्रण करे। उसमें चित्रकार की सी सुक्ष्म दृष्टि होनी चाहिए। "कभी वह प्रकृतिं को मानव की पृष्ठभूमि के रूप में अंकित कर सकता है कभी मानव कार्यों में भाग लेनेवाले सक्रिय पात्रों के रूप में, जो कभी मानव से सहानुभूति प्रकट करता है तो कभी उदासीन रहता है।"[15]

"कितने पाकिस्तान"में अदीब की अदालत में जब सत्रहवी सदी के गृहयुद्ध में शामिल सभी नायक, प्रतिनायक, खलनायक और चश्मदीद गवाहों को बुलाया जाता हैं तो अदालत मानो सत्रहवी सदी का दौर ही बन जाती है। दाराशिकोह शुजा, औरंगजेब, मुराद, जसवंत सिंह, मिर्झा राजा जयसिंह, सुलेमान सिपिहीर, दिलेर खाँ, के अलावा गंगा, नर्मदा, चंम्बल, सतलज व्यास और सिंधु नदियाँ भी मौजूद हो जाती है। कमलेश्वर ने प्राकृतिक पृष्ठभूमि के सहारे पाठकों के सामने इतिहास रखने की कोशिश की है। अदालत में नदियों का बयान देना इस घटनाओं से पाठक की रूचि बढती है। जैसे-जमुना ने बताया कि -"मुगलिया सल्तनत का उत्तराधिकार युद्ध अब खास मोड़पर आ

पहुँचा है . . . वो सर्दियों के दिन थे . . मैं उठती नर्म भाप का दुप्पट्टा ओढे सो रही थी कि मेरी नींद घोड़ो की तेज टापों से टूटी। मैंने देखा कि दक्षिण से शहजादा औरंगजेब आगरा मे दाखिल हो रहा है। . . राजमहल बंगाल से शहजादा शुजा भी आगरा पहुँच रहा है।"[16] कमलेश्वर ने नदियों की सहाय्यता से (बयान) से उत्तराधिकार के युद्ध पर प्रकाश डाला है। जैसे-नर्मदा का बयान :- "पूरब में शुजा के विद्रोह और आक्रमण की खबर औरंगजेब और मुराद को मिल गई थी। वे दोनों दक्षिण और दक्षिण-पश्चिम से आगरा की ओर बढ़ने लगे"[17]

इसीप्रकार क्षिप्रा, गंगा आदि नदियों ने भी बयान दिए हैं। चंम्बल नदी का बयान - "जब सामुगढ़ में लड़ाई के काले बादल मंडरा रहे थे, तब शहाजहाँ ने मिर्झा राजा जससिंह को हुक्म दिया था कि वह बिहार से जल्दी से जल्दी वापस आए और औरंगजेब तथा मुराद की बढ़ती फौजों के खिलाफ दाराशिकोह का साथ दे।"[18]

उत्तराधिकार के सामूगढ़वाले युद्ध में दारा का पराजय हो गया। वह भागकर आगरा, और वहाँ से दिल्ली की ओर चला गया। औरंगजेब का सेनापति बहादुर खाँ उसका पिछा कर रहा था। सतलुज नदी ने बयान दिया कि "औरंगजेब मिर्झा राजा मिर्झा राजा जयसिंह और खलिल उल्लाह को दारा के खिलाफ बहादुर खाँ की मदद के लिए रवाना कर दिया था।"[19]

इस प्रकार कमलेश्वर ने उत्तराधिकार के युद्ध को प्राकृतिक पृष्ठभूमि का सहारा लेकर रोचक तथा स्वाभाविक बनाया है। साथ-साथ कमलेश्वर ने सलमा और अदीब की प्रेमकहानी में मॉरिशस की प्राकृतिक पृष्ठभूमि का यथार्थ वर्णन किया है। जैसे- "यहाँ की दुनिया तो पानी का रहस्य महल थी। दुनिया के सारे मोतियों ने मिलकर मॉरिशस के तटों की रचना की है और सृष्टि में आजतक मनुष्य के जितने उजले आँसु बहे हैं, वे सब मॉरिशस के समुद्रों में संचित हैं . . . इसीलिए वे इतने धवल और पवित्र हैं। यहाँ हर पेड़ गाता है, हर पत्ती हाथ हिलाकर पास आने का निमंत्रण देती है।"[20]

इस तरह कमलेश्वर ने देशकाल वातावरण के दोनों छोरों को पाठकों के सामने लाने का सफल प्रयास किया है। प्राकृतिक पृष्ठभूमि के साथ-साथ कालविशेष का भी उन्होंने कितने पाकिस्तान के अंतर्गत चित्रिण किया है। ऐतिहासिक घटनाओंके साथ प्रकृति का चित्रण करके पाठकों को उपन्यास के प्रति आकर्षित किया है। इससे कमलेश्वर के ऐतिहासिक घटनाओं के साथ-साभ भौगोलिक पृष्ठभूमि की भी जानकारी सामने आती है।

कितने पाकिस्तान शैली

2.2.5 शैली के आधारपर 'कितने पाकिस्तान' का विवेचन

प्रत्येक साहित्य विधा की अपनी विशेषता होती है और अपने-अपने गुण भी। किसी भी विचार भावना या सिद्धांत को भाषाबद्ध कर देने से उसे साहित्य की कोटि में नहीं रखा जा सकता। साहित्य विचार या भावना को हि अभिव्यक्ति नहीं देता उसे कलात्मक रूप भी देता है। ऐसा करने के लिए विशेष शिल्प अपनाता है उस शिल्प को ही अंग्रेजी में टेकनिक कहते हैं।

साहित्य में शैली की महत्ता की एक अखंड प्राचीन परंपरा है। संस्कृत विद्वानों ने शैली को 'रीति' कहा है। आचार्य वामन ने 'काव्यालंकर सुत्र' में रीति का विश्लेषण करते हुए उसे विशिष्ठ पद-रचना कहा है। आधुनिक काल में इसे अंग्रेजी स्टाईल का पर्याय मान लिया गया है। प्रत्येक साहित्यकार प्रयत्नशील रहता है कि उसकी लेखन शैली में नवीनता और मौलिकता आ जाय। क्योंकि एक -सी शैली के प्रयोग के कारण पाठकों के मन में उब खीज तथा अरूचि पैदा होने का खतरा बना रहता है। शैली के संबंध में इस बात का ध्यान रखना आवश्यक है जितनी स्वाभाविक अर्थात पात्रानुकूल और स्थिति के अनुरूप शैली होगी उतना ही उसका प्रभाव पडेगा।

भगीरथ मिश्र कहते हैं-"उपन्यास की शैली संकेतात्मक न होकर विकृतात्मक होती है क्योंकि उसे पूर्ण वातावरण और उसमें रस और भावों की सृष्टी करनी होती है।"[21] सामान्य रूप से उपन्यास के वर्णन के अंतर्गत परिगणित की जानेवाली सभी

पद्धतियाँ शैलियां ही हो जाती है । अर्थात वर्णनात्मक के जो विविध रूप है उतनी ही उपन्यास की शैलियाँ हो सकती है। इसी को ध्यान में रखते हुए शुरू से आज के युग तक आवश्यकताओं के अनुसार उपन्यास की शैली में विविध प्रकार के नए-नए प्रयोग किए गए हैं।

कितने पाकिस्तान उपन्यास में कमलेश्वर ने निम्नालिखित शैलियों का प्रयोग किया है।

1. प्रतीकात्मक शैली
2. पूर्व-दीप्ति शैली
3. विश्लेषणात्मक शैली
4. पत्रात्मक शैली
5. डायरी शैली
6. आत्मकथात्मक शैली

2.2.5.1

1 प्रतीकात्मक शैली

जिन भावों को प्रकट करने में लेखक को कठिनाई होती है उन्हें सहज एंव प्रभावशाली ढंग से व्यक्त करने के लिए प्रतीकात्मक शैली का प्रयोग किया जाता है। पात्रों के मन की मन: स्थितियों का उद्घाटन कर महत्त्वपूर्ण घटनाओं को अभिव्यक्ति दी जाती है।

'कितने पाकिस्तान' उपन्यास में कमलेश्वर ने प्रतीकात्मक शैली का प्रयोग किया है। कमलेश्वर का कहना और मानना यह है कि सन 1947 में भारत विभाजन के बाद एक पाकिस्तान अस्तित्व में आ गया। उसी 'अलगाववादी' भावना को लेकर

आज घर-घर से लेकर विश्व में हजारों पाकिस्तान बन रहे हैं। इन बनते हुए पाकिस्तान के वजह से विश्व शांति का लोप हो गया है।

युद्धों के दौरान होनेवाली भीषण संहारता को भी कमलेश्वर ने प्रतीकात्मक शैली में व्यक्त किया है। किंतु इस बात का पूरा ध्यान रखा है कि घटित घटना के परिणाम में कोई फर्क नजर न आए। जैसे कि दूसरे विश्वयुद्ध में इस्तमाल किए गए अणुबम के कारण हो गयी संहारता का चित्रण करते हुए लिखा है कि "अदालत खचाखच भरी हुई थी। पहले एटमी परीक्षण में मरनेवाली तितलियों के पंख मौजूद थे। दम तोड़ते मूंगे और मोती भी बैठे थे। क्षत-विक्षत जलपुष्प एक ओर खड़े थे और जलकन्याएँ फफोलों से ग्रस्त अपने शरीर पर तुलसी के पत्तों से हवा करती मौजूद थी।"[22]

इसी तरह कमलेश्वर ने प्रतीकात्मक शैली का प्रयोग किया है।

2.2.5.2 विश्लेषणात्मक शैली

पात्रों के चेतन या अचेतन विचारों की प्रक्रिया को अभिव्यक्ति देने का प्रयास उपन्यासकार इस शैली में करता है। इसके माध्यम से घटनाएँ परिस्थितियाँ तथा पात्रों के मूल में स्थित कारण स्पष्ट हो जाते हैं।

'कितने पाकिस्तान' उपन्यास में कमलेश्वर ने इस शैली का प्रयोग किया है। कमलेश्वर ने सन् 1947 में भारत-पाकिस्तान विभाजन की इस घटना को पाठाकों के सामने रखते हुए घटना के मूल तक जाने का प्रयास किया है। जिसके अतंर्गत उन्होंने राम जन्मभूमी मंदिर और बाबरी मस्जिद को लेकर आज तक हो रहे झगड़े साथ ही सत्रहवी सदी में धर्म के नामपर खेला गया उत्तराधिकार युद्ध जिसमें कट्टर धर्मांध औरंगजेब का विजय, धार्मिक सेन्सॉर, ब्रिटिशों का आगमन, बॅ. जिन्ना की सहाय्यता से द्वि -राष्ट्र सिद्धांत की पैरवी करना अलगाववादी भावना से पाकिस्तान का उदय आदि घटनाओं का विश्लेषण किया है। कमलेश्वर को सत्रहवी सदी के उत्तराधिकार युद्ध में ही 'पाकिस्तान' बनने की नीवं दिखाई देती है उसका विश्लेषण करते हुए उन्होंने लिखा है कि "जब विश्वासघाती हिंदुओ की कमजोरी और साजिश के चलते सन 1659 में औरंगजेब ने खुद

अपने बड़े भाई दाराशिकोह को शिकस्त देकर हिंदुस्तान में ही अपना पाकिस्तान बनाया था। उन दिनों मुल्कों के नाम नहीं शंहशाहओं के नाम बदलते थे और शंहशाह के बदलने के साथ ही बदलता था सत्ता का रवैया और जहनियत . . और पाकिस्तानों के बनने का सिलसिला शुरू हो जाता था।"[24]

निष्कर्षत : यह कह जा सकता है कि कमलेश्वर ने विश्लेषणात्मक शैली के अंतर्गत घटनाओं के मूल तक जाकर घटनाओंको स्पष्ट रूप से विश्लेषित किया है।

2.2.5.3 पूर्व-दीप्ति शैली

पूर्व-दीप्ति शैली में जीवन की घटनाओं का चित्रण वर्णनात्मक रूप से न होकर स्मृतितरंगो के रूप में होता हैं। इसको अंग्रेजी में फ्लैश-बैक भी कहा जाता है। कथा जीवन के किसी उच्च महत्त्वपूर्ण, विशिष्ठ उद्दीप्त वर्तमान क्षण में कही जाती है। अत: जीवन के महत्त्वपूर्ण क्षणों में स्मृति-तरंगों के माध्यम से अतीत की घटनाओं के अंधकार को लिपि बद्ध करके दीप्त किया जाता है।

'कितने पाकिस्तान' उपन्यास अंतर्गत कमलेश्वर ने पूर्व-दीप्ति शैली का प्रयोग किया है। जैसे कि उपन्यास की शुरूआत ही पूर्व-दीप्ति शैली से हुई है। "एक भूली हुई दास्तान उसे याद आती है।"[25] अर्थात अदीब को अपने वे दिन याद आते हैं जब वह पढ़ाई के लिए इलाहाबाद जाता था, उसी स्टेशन पर विद्या नामक लड़की से उसकी पहचान हो गयी थी , जो कि फत्तेगढ़ रहनेवाली थी। तीज-त्यौहार और गर्मियों की छुट्टियों में घर आते समय वे दोनों एक साथ सफर करते। कानपुर स्टेशन पर विद्या उतरकर फत्तेहगढ़ वाली गाड़ी पकडती थी। मिलना, प्रतीक्षा और साथ-साथ सफर करना दो साल तक चलता रहा। अगले वर्ष गर्मियों के छुट्टि में वापस आते समय विद्या ने अगले वर्ष पढ़ाई के लिए न आने की बात छेड़ दी, और कानपुर प्लेटफॉर्म की तरफ मुड़ने से पहले अपना रूमाल गिराया था। अदीब विद्या का रूमाल उठा नहीं पाया। किंतु इतना वह समझ गया कि विद्या की शादी तय हुई है।

कमलेश्वर ने विद्या और अदीब के बीच के भावनिक संबधों पर प्रकाश डालते हुए आगे विद्या से परवीन बनने की घटनाओं को पूर्व दीप्ति शैली में प्रस्तुत किया है।

2.2.5.4 पत्रात्मक शैली :-

पत्रात्मक शैली के अंतर्गत पात्र एक दूसरे को पत्र लिखते हैं जिससे कथानक का विकास होता है और चरित्र चित्रण में सहायता भी।

कमलेश्वर ने भी उपन्यास में पत्रात्मक शैली का प्रयोग किया है। अदीब कई बरसों के बाद जब कई नौकरीयों और कई शहरों को छोड़ता हुआ बंबई में काम करने लगा तब उसे एक रहस्यभरा खत मिला। लिखा था -

"अदिबे आलिया।

किसी को देके दिल कोई नवासंजे फुगां क्यों हो
न हो जब दिल ही सीने में, तो फिर मुँह में जुँबा क्यों हो !
किया गमख्यार ने रूसवा लगे आग इस मुहब्बत को
न लाए ताब जो गम की, वो मेरा राजदां क्यों हो !
वफा कैसी, कहाँ का इश्क, जब सर फोडना ठहरा
तो फिर ऐ संगेदिल ! तिरा ही संगे आस्तां क्यों हो।

- खुदा हाफिज . . .।"[26]

यह पत्र रहस्यमय इसीलिए था क्योंकि इसपर लिखने वाले का नाम और पत्ता नहीं था। अदीब इस पत्र के बारे में सोच रहा था कि इतने में उसका सहायक अर्दली टेलिप्रिंटर से उठायी खबरों को लेकर बता रहा था कि कारगिल महमूद हलाके में घुसपैठियों के नाम पाकिस्तानी फौजियोने अघोषित आक्रमण कर दिया है। नियंत्रण रेषा तोड़कर उन्होंने कई-कई मील अंदर तक अपनेअड्डे और बंकर बनाए हैं। मगर हमारे देश के कोई

राजनेता या कोई भी राजनीतिक पार्टी इस पर अपना मत व्यक्त नहीं कर रही है। तब अदीब प्रधानमंत्री और रक्षामंत्री जी को खत लिखता है -

कमलेश्वर ने ऐतिहासिक पत्र का भी उपन्यास में प्रयोग किया है। औरंगजेब का समर्थक और दारा विरोधी जयपुर के मिर्झाराजा जयसिंह का जोधपुर के महाराज जसवंत सिहं को डराने धमकाने के लिए लिखा हुआ खत। ताकि वह दाराशिकोह का साथ छोड़कर औरंगजेब का साथ दे।

"आपको इसमें क्या लाभ हो सकता है कि इस
मंद भाग्य शहजादे दाराशिकोह को आप सहायता
देने का प्रयास करे! इस कार्य में लगने से आपका
और आपके परिवार का नाश अवश्यंभावी है
और इससे दृष्ट दारा के हितों को भी लाभ
नहीं होगा। शहजादा औरंगजेब कभी आपको
क्षमा नहीं करेगा . . . . . ।"[28]

इस तरह उपन्यास में पत्रात्मक शैली का कमलेश्वर ने प्रयोग किया है।

2.2.5.5 डायरी शैली

डायरी शैली यह तो आत्मकथात्मक शैली का एक रूप है। कोई पात्र डायरी लिखता जाता है, जिससे उस पात्र के भी जीवन और व्यक्तित्व का प्रकाशन होता है और अन्य व्यक्तियों के भी जीवन और व्यक्तित्व का प्रकाशन होता है।

कमलेश्वर जी ने 'कितने पाकिस्तान' के अंतर्गत डायरी शैली का प्रयोग किया है। मुगल बादशाह बाबर जिसप्रकार कुशल प्रशासक था, उसी प्रकार वह कुशल साहित्यिक भी था। उसने डायरीनुमा अपना 'बाबरनामा' लिखा था। इसके लिए बाबर ने

सीकरी में पानी के बीच पत्थर का एक तख्त बनवाया था जिसपर बैठकर ये अपना इतिहास खुद लिखता या लिखवाता।

इसी बाबर नामा के 2 अप्रैल 1528 से लेकर 17 सिंतबर 1528 तक के पन्ने गायब है। इन दिनों में बाबर कहाँ था ? क्योंकि इसी कालखंड में बाबर पर अयोध्या जाके वहाँ का प्राचीन राममंदिर तोडकर वहाँ मस्जिद बनवाने का आदेश देने का आरोप लगाया गया है। आरोपों का खंडन करने के लिए बाबर की बेटी गुलबदन ने अपने 'हुमायुँनामा' पन्नों को बाबरनामा के पन्नों के जगह रखने को कहा जो गायब हैं। गुलबदन बताती है कि पहली बार मेहम बेगम (बाबर की पत्नी) और वह हिंदुस्तान आ रही थी। इसीलिए उन्हे लेने के लिए बाबर अवध के जंगलो की शिकार छोड़कर 7 अप्रैल 1528 से पहले आगरा पहुँच चुके थे।

इसी तरह कमलेश्वर ने डायरी शैली का प्रयोग किया है।

2.2.5.6 आत्मकथात्मक शैली

आत्मकथात्मक शैली के अतंर्गत उपन्यास में कोई एक पुरूष पात्र या नारी पात्र अपनी कथा स्वंय कहते हैं। कितने पाकिस्तान में कमलेश्वर ने सत्रहवी सदी के दौर के बहुत से नायको महानायकों को इस शैली के अतंर्गत चित्रित किया है। जैसे कि शहाँजहाँ अदीब को अपनी व्यथा बताते हुए कहता है - "मेरी गवाही के बगैर आपका इतिहास पूरा नहीं होगा। मुझ से ज्यादा बदनसीब बाप और बादशाह इस दुनिया में दूसरा नहीं है। पेट की इस जानलेवा बीमारी ने मुझें तोडकर रख दिया है। मैं . . . मे. पागल हो गया हूँ . . कभी मैं दारा को अपने ही विद्रोही शहजादों के खिलाफ फौजी कारवाई की राय देता हूँ . . कभी मिर्झाराजा जयसिंह को पराजित शुजा के साथ सुलह की सलाह देता हूँ . . .। कभी सुलेमान शिकोह को जल्द से जल्द आगरा लौटने का आदेश देता हूँ तो यह सोचकर दिल धड़कने लगता है कि मैं ख़ुद अपने बेटों को एक-दूसरे के लिखाफ लड़वा रहा हूँ।"[30]

उत्तराधिकार का फैसलाकुन युद्ध देवराई के मैदान हुआ। जिसमें राजरूप दारा के साथ विश्वासघात करके औरंगजेब का साथ दिया राजरूप कहते हैं "इसमें मेरे लिए

शर्मिन्दा होने की कोई बात नहीं है। मै राजपूत हूँ। मै हिंदू हूँ . . . और मुझे गर्व है कि मेरे दौर के हर हिंदू ने विश्वासघात को अपना जीवन मूल्य बना लिया था . . . दाराशिकोह के लिए वतन और मुल्क का कोई मतलब और अर्थ रहा होगा, लेकिन हम हिंदू उस मध्यकाल में सिर्फ अपने लिए जी रहे थे . . . हमारा कोई देश या मुल्क नहीं था।"[32]

इस तरह कमलेश्वर ने आत्मकथात्मक शैली का प्रयोग करते हुए पात्रों का चित्रण किया है। साथ ही उपर्युक्त प्रतिकात्मक शैली, विश्लेषणात्मक शैली, पूर्व-दीप्तिशैली, पत्रात्मक शैली, डायरीशैली, आत्मकथात्मक शैलीयों के सहायता से शिल्पसौंदर्य को अधिक आकर्षक बना दिया है। इसीकारण 'कितने पाकिस्तान' उपन्यास की कथा रोचक ढंगसे अभिव्यक्त हुई है।

2.2.6 उद्‌देश्य

कथावस्तु की अंतिम अन्विति उद्‌देश्य है। अर्थात उसे परिणाम फल, या बीज कहा जाता है। जीवन की व्याख्या तथा आलोचना करना यही उसका तात्पर्य है। उपन्यास में जीवन का चित्रण होता है इसीलिए उपन्यासकार जीवन के साधारण और असाधारण व्यापारों का मानव जीवन पर कैसा प्रभाव पड़ता हैं, इसका अंकण करता है। सभी उपन्यासों में कुछ विशेष विचार और सिद्‌धांत स्वयं ही आ जाते हैं। कुछ विद्‌वान उपन्यास का उद्‌देश्य केवल मनोरंजन मानते हैं। किंतु उपन्यास का मात्र 'मनोरंजन की सृष्टि करना' यह उद्‌देश्य न मानकर मानव जीवन के प्रश्नों को लेकर अच्छे-बुरे पहलुओं को पाठकों के सामने लाना यह भी उद्‌देश्य रहता है। क्योंकि कलाकार (उपन्यास) का यह दायित्व है कि वह जीवन और उसकी समस्याओंके विषय में सोचे और उनके समाधान के बारे में अपने सुझाव दे।

श्रेष्ठ उपन्यास लेखक अनुभवी और विचारशील होते हैं। वे लोगों के भावों और विचारों तथा व्यवहारों का निरीक्षण, अनुशीलन कर उनके संबध में ज्ञान प्राप्त करते हैं। अनुभव और ज्ञान साहयता से नैतिक महत्त्व का ऐसा चित्र अंकीत करते हैं कि जिसकी उपेक्षा नहीं की जा सकती। इसमें पाठक शिक्षा ग्रहण कर नैतिक सिंद्‌धात और

आर्दशों का महत्त्व समझते हैं। उपन्यास ऐसा ही केंद्रीय भाव और उसके प्रभाव में बिखरा रहता है। सरल और सुदंर ढंग में होना चाहिए। कहीं-कहीं लेखक कथावस्तु शैली ओर तथ्य केवल विशिष्ठ नैतिक प्रणाली में बतलाते हैं इसे नाटकीय ढंग कहा जाता है।

'कितने पाकिस्तान' यह कमलेश्वर का बृहद उपन्यास होने के साथ-साथ इससे बहुत से मौलिक उद्‌देश्यों को पाठकों के सामने लाने का प्रयास किया है। बृहद उपन्यास होने के बावजूद भी एक केंद्रिय उद्‌देश्य पाठकों के सामने हमेशा रहता है। कमलेश्वर ने 'विभाजन' की समस्या को लेकर समाजपर उसकी हो रही प्रतिक्रिया को पाठकों के सामने लाया है। साथ में आज का माहोल दिलों दिमाग में पलित 'अलगाववाद' आदि पर विचार किया है। उपन्यास उद्‌देश्य संक्षिप्त रूपसे इस प्रकार हैं -

1. उपन्यास का सुत्रधार अदीब।
2. देशी विदेशी संस्कृतियों का गुणगाण।
3. पुराने युगों सदियों को टटोलना।
4. आर्यों का आगमन।
5. देवत्ताओंकी भोगवादी वृत्ति दिखाना।
6. दुनिया की पहली प्रेम -कहानी को प्रस्तुत करना।
7. अलगाववादी भावना को दिखाना।
8. बाबर पर लगाए गए आरोप और उनका खंडन करना।
9. अंग्रेजों का भारत आगमन।
10. पराधित भारत का स्थिति दिखाना।
11. अंग्रेजों द्वारा विभाजन के बीज बोने की शुरूआत।
12. धर्म के नामपर हिंदुस्तान को लुटना।
13. हिंदु-मुस्लिम में बेबनाव।

14. बुटासिंह और जेनिब की प्रेम-कहानी पर प्रकाश डालना।

15. सत्रहवी सदी का 'उत्तराधिकार युद्ध' को चित्रित करना।

16. औरंगजेब का कट्टर धर्मांध रूप दिखाना।

17. राजाश्रित इतिहासकार और उनके (इतिहास) साहित्य पर प्रकाश डालना।

18. विद्या से परवीन बनने की घटना को चित्रित करना।

19. सन् 1857 का स्वांतत्र संग्राम पर प्रकाश डालना।

20. एटम युग (अणुयुग) का अवतरण होना।

21. अंग्रेजो की साजिशों का पर्दापाश।

22. गांधी, नेहरू, जिन्ना,इकबाल आदि के विचारोंपर प्रकाश डालाना।

23. भारत की आझादी और पाकिस्तान का निर्माण।

14 अगस्त, 1947 को अखंड हिंदुस्तान का विभाजन होकर भारत और पाकिस्तान दो देश बन गए। दुनिया के नक्शे में पाकिस्तान आ गया। लेकिन जो सरहद विभाजन के वक्त तय हुई वह सिर्फ धरती की नहीं तो लोगों की थी। लोगों के दिलों में अलगाववादी भावना कट्टर धर्मांधता के कारण दुनियामें कितने पाकिस्तान और बन रहे हैं। धर्म के नामपर हर दिन आंतकवादी निरपराध लोगों को मार रहे हैं। कश्मीर इसका जिता-जागता उदाहरण है। मुजाहिदीन के नाम पर पाकिस्तान की फौज ने कारगिल, द्रास के इलाके में अपना वर्चस्व प्रस्थापित किया था। लेकिन भारत की सेना ने उसे वहाँ से खदेड़ दिया।

आज के दौर में अदीब (मतलब पुरा विश्व) का मन आंतकवाद से भयभीत है। बढ़ती हुई शस्त्राअस्त्र प्रतियोगिता ने मानवता पर कभी भी आंच आ सकती है। दिन -ब-दिन विज्ञान का हर नया अविष्कार ढुंढा जा रहा है। जो मानवता के लिए वरदान भी है वही सत्ता लोलुप राष्ट्र के हाथ में चला गया तो फिर वही दशा हो जाऐगी जो

दूसरे विश्वयुद्ध में हिरोशिमा और नागासाकी की हुई थी। अणुयुग में तो हर राष्ट्र अणुबमों का परिक्षण लेकर अपनी सामर्थ्य शक्ति का संदेश दे रहे हैं। बार-बार अणुपरिक्षणों के कारण उपजाऊ धरती बंजर रेगिस्तान बन गयी है। विषैली हवा के कारण बाल-बच्चे अपाहिज लुले, लंगड़े अंधे पैदा हो रहे हैं। मतलब आनेवाली सदियों को भी पहले ही दफना दिया जा रहा है।

कमलेश्वर लोगों के दिलों - दिमाग पलित अलगाववादी भावना को निकालकर उसकी जगह समता, एकता,बंधुता आदि भावनोंका प्रचार और प्रसार करना चाहते हैं। ऐसा करने से 'शांति का आलम' बना रहेगा ऐसा उन्हें विश्वास है। दुनिया में 'शांति बनी रहे' यही कमलेश्वर का केंद्रीय उद्देश्य है।

निष्कर्ष

कमलेश्वर रचित 'कितने पाकिस्तान' उपन्यास.का सुत्रधार है - अदीब। अदीब और उसका सहाय्यक अर्दली महमूद दोनो युगों की नब्ज पर उंगली रखकर झूठ का पर्दा पाश करके सच्चाई पर प्रकाश डालते हैं। यह उपन्यास बृहद होने के कारण इसमें उपकथाओं की भरमार हुई है। अदीब (लेखक) ने एक अदालत का निर्माण किया है। वही पर समय से पहले मरे हुए (मारे गए) लोगों की दस्तकें सुनी जाती है। उनको इंन्साफ देने का कार्य अदीब करता है। इस अदालत की कोई निश्चित समय और स्थल नहीं है।

'कितने पाकिस्तान' उपन्यास में सतयुग, बैदिक युग कलियुगों का चित्रण किया हैं। बाबर, सत्रहवी सदी के उत्तराधिकार के युद्ध में भाग लेनेवाले सभी नायक, खलनायक, इनके साथ भारत स्वांतत्र्यता संग्राम में हिस्सा लेनेवाले क्रांतिवीर और विभाजन के लिए जिम्मेदार बॅ. जिन्ना, इकबाल और अंग्रेजी सत्ता अफसर आदि के साथ-साथ विद्या सलमा बुटासिंह, जेनिब आदि पात्रों का चित्रण किया है।

अदीब उपन्यास का सुत्रधार है, पर नायक नहीं। अदीब के जरिए हम उन कहानीयों तक पहुँचते हैं। जैसे कि दुनिया की पहली प्रेम कहानी। अदीब ने इस कहानी के द्वारा उस युग का चित्रण किया है जब देवताओंमे केवल भोगवादी और इर्ष्यालूवृत्ति थी।

युरक सम्राट गिलगमेश की सहाय्यता से मनुष्य ने प्रेम, मित्रता, श्रम आदि गुणों की तलाश की। 'पाकिस्तान' बनने की घटना को सोलहवी सत्रहवी शताब्दीयों मे शुरूआत हुई थी। इन सदीयोंमें धर्म के नाम पर अन्याय अत्याचार हुए। अलगाववादी भावना का बीज इन सदीयों में ही बोया गया था। जिसकी फसल सन् 1947 का भारत-पाकिस्तान विभाजन है। व्यापार का बहाना बनाकर आए हुए अंग्रेज धीरे-धीरे भारत के शासनकर्ते बन गए। उन्होंने लोगों के दिलोदिमाग में अलगाववाद की भावना को बिठाया। 'फोड़ो और राज्य करो' इस महामंत्र के सहारे ब्रिटिशों ने हिंदू-मुस्लिम को अलग किया। इसके लिए उन्होने "इस्लाम खतरे में है" और "बाबर ने रामजन्मभूमि मंदिर तोड़ा है" ऐसी परस्पर विरोधी धार्मिक भावनाओंका सहारा लिया। वैसे स्वार्थी राजाओं, सरमंजामदारों अमीर उमराव की यहाँ कमी नहीं थी। और जो ब्रिटिशों के खिलाफ थे उनमें राष्ट्रीयत्त्व की भावना नहीं थी। अपने राज्य और वहाँ का भूभाग पर ही वे सीमित रहे।

ब्रिटिशोंने भारत के साथ व्यापार करते हुए चीन का रास्ता ढुंढ निकाला। चीनी लोगों को अफीम की लत तो थी पर बहुत कम मात्रा में। साल में जहाँ 200 पेटीयाँ अफीम वह भी दवाइयों के लिए जाती थी। वहाँ ईस्ट इंडिया कंपनी के जहाजियों ने अफीम की तस्करी शुरू करके 2000 पेटीयोंका धंधा करने लगे। इस अवैध व्यापार के लिए खुली छूट ईस्ट इंडिया कंपनी ने दी थी। इस तरह से बड़ी सभ्यताओंको निस्तेज करने का तरीका इन विदेशी लुटेरोंने निकाला है। "सबसे पहले ये पूर्वजों की परछाइयों को कत्त्ल करते हैं. . सांस्कृतियों का विनाश करते हैं फिर पुरानी और पुख्ता सभ्यताओंको बदलते हैं।

'कितने पाकिस्तान' में धर्म और धर्मांधता या सत्ता-प्रेम और मानव-प्रेम के बीच के अंतर को स्पष्ट करने के लिए कमलेश्वर मुगल बादशहा के परवर्ती काल का विस्तार से विवेचन किया है। उसमें उन्होंने यह स्पष्ट करने की चेष्टा की है कि यदि शहाजहाँ का उत्तराधिकारी दारा शिकोह बन पाता तो शायद भारत में इतने सारे पाकिस्तान भी न बन पाते। और इस सिलसिले में सर्वाधिक कष्टप्रद तथ्य यह है कि तत्कालीन हिंदू राजाओं ने

भी केवल अपने सत्ता-प्रेम के कारण मानव -प्रेम या 'मानवीयता' की अनदेखी करके कट्टरपंथी और परपीड़क औरंगजेब को साथ दिया।

धर्मांधता या सत्ता-लोलुपता के कारण की गई हिंसा, लुट-पाट और अत्याचारों के विवरणों को जुटाकर और उन्हें समकालीन परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत करके कमलेश्वर ने 'कितने पाकिस्तान' में बार-बार यह बताने की चेष्टा की है कि किसी शासक की छोटीसी भूल भी भावी इतिहास को प्रदुषित कर सकती है और उसके कारण हिंसा का ऐसा दौर शुरू हो सकता है, जो कई पीढ़ियों तक थमने का नाम ही नहीं लेता। जैसे सन् 1947 में अगर तत्कालीन अंग्रेज वायसराय लॉर्ड माऊंटबेटन भारत के विभाजन का अनुमोदन न करता तो न तो पाकिस्तान बनता, नही बांगला देश और न ही भारत की विभाजन के बाद की हिंसा या पाकिस्तान द्वारा थोपे गए युद्धों की हिंसा को झेलना पड़ता। इसी क्रम में कारगिल में की गई अवांछित घुसपैठ के कारण हुई हिंसा या भावी युद्धोंमे होने वाली रक्तपात की अशंका से भी मुक्त नहीं हुआ जा सकता, और न भविष्य में हुआ जा सकेगा।

इसमें कमलेश्वर ने पात्रानुकूल भाषा की दृष्टि से उर्दू शब्दों का भी बहुतायत से प्रयोग किया है। साथ में अदीब द्वारा अदालत का निर्माण यह भी एक नया प्रयोग ही है। रोचकता का निर्वाह करने के लिए नाटकीयता का भी सहाया लिया है। परंतु तमाम तरह के प्रयोंगों के और उपायों के बावजूद भी कई स्थलों पर उपन्यास का कथा-प्रवाह टूट गया हैं। परिणामत: उन स्थलों पर उपन्यास का प्रभाव भी खंड़ित हुआ हैं। फिर भी कमलेश्वर ने उपन्यास को लिखते हुए 'साहित्यिक कर्म' का पूरा ध्यान रखा है। अतीत की घटनाओं को 'अदीब' की अदालत में कुछ इस तरह प्रस्तुत किया है कि पाठक भी उस 'अदीब' की सोच के अनुसार विवेचन-विश्लेषण करने को प्रेरित हो सकता है। और उसके निर्णयों और निष्कर्षो से भी सहमत हो सकता है।

कमलेश्वर ने उपन्यास में रक्तपात और हिंसा की अनेकानेक ऐतिहासिक एंव सांस्कृतिक घटनाओं के बीच कुछेक प्रेम और सद्भावनाओं से भरी घटनाएँ भी चित्रित

की है। जिनके कारण पाठक भविष्य के प्रति पूर्णत : निराशावदी होने से बच सकता है। आज के अणुयुग के दौर में विज्ञान के नाम पर सत्ता लोलुप राष्ट्र अणुबमों का परीक्षण धरती को बंजर बनाने में तुले हैं। इन अणुबमों के परीक्षण के कारण हवा इतनी जहरीली बनी हैं कि सांस लेना भी मुश्किल हो गया है।

ऐसे माहौल में भी उपन्यास अंत तक पहुँचते - पहुँचते मानवता के भविष्य के प्रति भी आशा की किरण खोज ही लेता है। कमलेश्वर का यह मानना है कि बोधिवृक्ष की जड़े नीलकंठ की तरह सारा विष पी लेती हैं। इसीलिए कबीर द्वारा "पहला बोधिवृक्ष मैं पोखरन में फिर सरहद पार करके दूसरा वृक्ष चगाई की पहाडियों में लगाने की बात कही है। क्योंकि भारत-पाकिस्तान ये दोनों देश बार-बार अणुबमों का परिक्षण लेकर हवा जहरीली कर रहे हैं।

कमलेश्वर ने 'कितने पाकिस्तान' में 'साहित्यिक कर्म' पर पूरा ध्यान रखा है। साथ में उन्होंने सामाजिकता, धार्मिकता राजनितिकता सांस्कृतिकता पर भी ध्यान रखा हैं। अदीब एक साथ देश-विदेश का गमन करता है। कभी वही सत्रहवी सदी का उत्तराधिकारी युद्ध को पाठकों के सामने वर्णित करता है। सत्युग, वैदिक, कलियुग पर भी प्रकाश डालता है। कभी ब्रिटिश सत्ता का आगमन और साजिशों पर भी विचार विनिमय करने के लिए पाठक को बाध्य करता है। उपन्यास पढ़ते वक्त यह ध्यान में आता है कि 'समय' उपन्यास में नायक, उपनायक और खलनायक बना है।

वैसे कमलेश्वर अपने उन उपन्यासों में बेहद सफल हुए है जिनमें उन्होंने सहज-स्वाभाविक शिल्प और शैली को अपनाया है। इस सहज स्वाभाविक शैली के रहते हुए भी कहीं-कहीं वे प्रतीकात्मक ढ़ंगसे भी अपनी बाते स्पष्ट कर सके हैं जैसे 'एक सडक सतावन गालियां' तीसरा आदमी रेगिस्तान' 'काली आँधी' समुद्र में खोया आदमी आदि में। इस परिप्रेश्प में 'कितने पाकिस्तान' पर विचार करते हुए लगता है कि यह उपन्यास भी अपने जटिल कथ्य के बावजूद भाषा, शैली और शिल्प में सहज - स्वाभाविक है, इसीलिए उपन्यास बृहदकार होते हुए भी पठनीय और प्रासंगिक है।

संदर्भ -सूची

1. डॉ. शांतिस्वरूप गुप्त, पाश्चात्य काव्यशास्त्र के सिंध्दात पृ. 361
2. कमलेश्वर, कितने पाकिस्तान, पृ.320
3. वही, वही, पृ. 231
4. वही,वही, प्रस्तावना से
5. वही, वही, पृ.18/19
6. वही, वही,पृ.143/144
7. वही, वही,पृ. 274/275
8. वही, वही,पृ. 38
9. वही, वही, पृ.186
10. वही, वही, पृ. 283/284
11. डा.शांतिस्वरूप गुफ्त, पाश्यात्य काव्यशास्त्र के सिध्दांत, पृ.370
12. कमलेश्वर, कितने पाकिस्तान, पृ.40
13. वही, वही, पृ.141
14. वही, वही, पृ.212
15. डा. शांतिस्वरूप गुप्त, पाश्चात्य काव्यशास्त्र के सिध्दांत, पृ. 371
16. कमलेश्वर, कितने पाकिस्तान, पृ. 204
17. वही, वही, पृ. 209
18. वही,वही, पृ.210
19. वही, वही, पृ. 217

20. कमलेश्वर, कितने पाकिस्तान,पृ.130

21. भगीरथ मिश्र, काव्यशास्त्र, पृ.81

22. कमलेश्वर, कितने पाकिस्तान, पृ.350

23. वही, वही, पृ.220

24. वही, वही, पृ.7

25. वही, वही, पृ.10

26. वही, वही,पृ.14

27. वही, वही, पृ. 224

28. वही, वही, पृ. 211

29. वही, वही, पृ. 223

****